मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

उत्तरशक्ति

हिन्दी दैनिक

मुंबई
वर्षः 9 अंक 38
गुरुवार, 13 अगस्त 2026
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

FCRA Bill JPC को भेजा गया, विपक्ष के हंगामे के बीच कई बिल पारित

नई दिल्ली, 12 अगस्त। विपक्ष के भारी हंगामे के बीच, लोकसभा ने बुधवार को 'विदेशी योगदान (विनियमन) संशोधन विधेयक, 2026' को संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजने का प्रस्ताव ध्वनि मत से पारित कर दिया। इसके तुरंत बाद सदन की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई। इस बीच, राज्यसभा ने 'राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (संशोधन) विधेयक, 2026' पारित किया और 'केरल (नाम परिवर्तन) विधेयक, 2026' पर विचार और उसे पारित करने की प्रक्रिया शुरू की। विपक्ष ने लगातार विरोध-प्रदर्शन जारी रखा, जबकि संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह और सरकार NEET से जुड़े छात्रों के विरोध-प्रदर्शन पर लोकसभा में तुरंत चर्चा शुरू करने के लिए तैयार है, बशर्ते विपक्षी सांसद मयार्दा बनाए रखें और सहयोग करें। भारतीय जनता पार्टी

की सांसद सुष्मिता देव ने बुधवार को कहा कि उन्होंने किसी राज्य की वेशभूषा पर कोई टिप्पणी नहीं की और राज्यसभा से ऐसा कोई संदेश नहीं जाना चाहिए जिससे भारत को सांस्कृतिक या धार्मिक आधार पर बांटने की भावना पैदा हो। यह स्पष्टीकरण उन्होंने माकपा सांसद जॉन ब्रिटास के उस आरोप के सिलसिले में दी, जिसमें उन्होंने कहा था कि सोमवार को सदन की कार्यवाही के दौरान भाजपा सदस्य ने उन्हें बार-बार लुंगीवाला कहा था। लोकसभा ने बुधवार को खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन विधेयक, 2026 विपक्ष के हंगामे के बीच पारित कर दिया, जिसके तहत राज्यों को खनिज अधिकारों पर अतिरिक्त कर लगाने से रोका जाएगा। खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन विधेयक, 2026 के जरिए केंद्र सरकार ने खनिज वाले क्षेत्रों में खनिज संपदा की मात्रा से संबंधित निर्धारित मानकों के अनुसार खनिज-युक्त भूमि के विनियमन को भी अपने नियंत्रण में लेने का प्रावधान किया है। केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी किशन रेड्डी ने विपक्षी सदस्यों के विरोध के बीच विधेयक को सदन में चर्चा एवं पारित करने के लिए पेश किया। जनता दल (यूनाइटेड) के सांसद संजय झा ने बिहार में कृषि उपज बाजार समिति (एपीएमसी) व्यवस्था खत्म करने के लिए राज्यसभा सदस्य और पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सराहना करते हुए बुधवार को कहा कि इस कदम से बिचौलियों की भूमिका समाप्त हुई और किसानों को उनकी उपज का भुगतान सीधे बैंक खातों में मिलने लगा। राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (संशोधन) विधेयक, 2026 पर राज्यसभा में चर्चा के दौरान झा ने नीतीश कुमार के दो दशक से अधिक समय बाद संसद में लौटने का भी उल्लेख किया। लोकसभा ने बुधवार को विदेशी अंशदान (विनियमन) संशोधन (एफसीआरए) विधेयक, 2026 को विस्तृत समीक्षा और संभावित सुझावों के लिए संसद की संयुक्त समिति को भेजने संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी दी। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी (सपा) और द्रमुक ने विधेयक को अल्पसंख्यकों के खिलाफ करार देते हुए इसे वापस लेने की मांग की। सरकार ने विपक्ष के आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि इस विधेयक में एक भी प्रावधान अल्पसंख्यकों के खिलाफ नहीं है ।

तथ यह सिर्फ देश की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने इस विधेयक को संसद की संयुक्त समिति के पास भेजने का प्रस्ताव रखा, जिसे सदन ने विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बीच ध्वनिमत से मंजूरी दी।

असम सरकार ने बाढ़ पीड़ितों के लिये किया 1000 करोड़ के महापैकेज का ऐलान

असम, 12 अगस्त। असम सरकार ने 19 जुलाई से ऊपरी असम के शिवसागर, चराइदेव और जोरहाट ज़िलों में आई असामान्य बाढ़ के बाद राहत, सहायता और पुनर्वास कार्यों के लिए लगभग 1,000 करोड़ रुपये देने का वादा किया है। मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में घोषणा की कि एक मोबाइल एप्लिकेशन के जरिए नुकसान का आकलन करने के लिए सर्वे किया जा रहा है। अब तक, 960 सर्वेक्षकों ने 8,325 परिवारों का सर्वे पूरा कर लिया है और दूसरा चरण चल रहा है। उम्मीद है कि सर्वे की प्रक्रिया 15 सितंबर तक पूरी हो जाएगी।

उन्होंने भरोसा दिलाया कि सर्वे पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से किया जाएगा और बाढ़ से प्रभावित लोग लाभार्थियों की विस्तृत सूची देख सकेंगे। जिन लोगों का नाम शुरू में छूट जाएगा, उन्हें सर्वे पूरा होने के बाद भी सूची में शामिल होने का

मौका मिलेगा। मुख्यमंत्री ने उन इलाकों में 'मुख्यमंत्री राहत कोष' का इस्तेमाल करके हाउसिंग कॉलोनी बनाने की योजना का भी संकेत दिया, जहाँ बाढ़ से घर पूरी तरह नष्ट हो गए हैं।उन्होंने बाढ़ से हुए नुकसान के लिए इंश्योरेंस से मुआवजा पाने के हकदार लोगों से अपने क्लेम फाइल करने को कहा और बैंक लोन चुकाने में छह महीने की मोहलत या समय बढ़ाने के लिए 30 अगस्त तक आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया। बाढ़ प्रभावित इलाकों में स्कूलों को फिर से चालू करने की कोशिशें चल रही हैं और सरकार का लक्ष्य 15 अगस्त तक पढ़ाई-लिखाई की गतिविधियां शुरू करना है। इस काम में मदद के लिए 793 स्कूलों में से हर एक को 2 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी गई है।असम की धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए, सरकार पवित्र 'भादा' महीने के दौरान 'नाम प्रसंग' में मदद के लिए हर 'नामघर' को 1.50 लाख रुपये देने की योजना बना रही है। सरकार बाढ़ की स्थिति का फायदा उठाकर पैसे कमाने या ऐतिहासिक रूप से एकजुट रहे असमिया समाज में फूट डालने वाली किसी भी नकारात्मक गतिविधि या टिप्पणी पर कड़ी नजर रखेगी और उनके खिलाफ कार्रवाई करेगी। मुख्यमंत्री सरमा ने बताया कि 72 यूट्यूबर ने बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए फंड इकट्ठा किया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अगर इस फंड का इस्तेमाल सच में बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए किया गया है, तो सरकार उनके प्रयासों को सम्मान देगी।

संसदीय लोकतंत्र का अपमान, किरेन रिजिजू बोले- चर्चा से भाग रहा विपक्ष

नई दिल्ली, 12 अगस्त। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को कहा कि वे अपनी ज़िंदगी में पहली बार पूरी तरह से निराश महसूस कर रहे हैं। वे एक ऐसी स्थिति देख रहे हैं जहाँ सरकार संसद में चर्चा करना चाहती है, लेकिन विपक्ष उससे भाग रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति की कल्पना करना भी मुश्किल है, क्योंकि संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष ही चर्चा की मांग करता है और सरकार जवाब देती है। उन्होंने कहा कि मैं पूरी तरह से परेशान हूँ। अपनी ज़िंदगी में पहली बार मैं ऐसा नजारा देख रहा हूँ जहाँ सरकार संसद में चर्चा करना चाहती है, लेकिन विपक्ष उससे भाग रहा है।

उन्होंने कहा कि इसकी कल्पना करना भी मुश्किल है, क्योंकि संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष ही चर्चा की मांग करता है और सरकार

जवाब देती है। लेकिन यहाँ, सरकार खुद कह रही है कि हम चर्चा करेंगे और जवाब देंगे, फिर भी विपक्ष सुनने को तैयार नहीं है। क्या आप ऐसी स्थिति की कल्पना कर सकते हैं? किरेन रिजिजू ने आगे कहा कि यह लोकतंत्र के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि उन्होंने बार-बार इस मामले पर चर्चा करने की इच्छा जताई है, फिर भी विपक्ष सहमत होने से इनकार कर रहा है।

उन्होंने कहा कि नतीजतन, गृह मंत्री को एक और पत्र लिखना पड़ा; गृह मंत्री ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर फिर से कहा कि हम खुली, व्यापक और विस्तृत चर्चा के लिए तैयार हैं और उनसे विपक्ष के नेताओं को इसके लिए मनाने का आग्रह किया। क्या आपने कभी ऐसी कोई बात सुनी है? सरकार खुद अध्यक्ष से गंभीरता से अनुरोध कर रही है कि वे विपक्ष को चर्चा में भाग लेने के लिए मनाएं। आज भी, हमने बार-बार विपक्ष से तुरंत चर्चा शुरू करने का आग्रह किया, लेकिन उनमें हिम्मत की कमी है। यह देश के लिए अच्छा नहीं है।

रिजिजू ने यह भी पूछा कि अगर चर्चा ही नहीं होगी तो संसद कैसे काम करेगी और कहा कि अगर विपक्ष सुनना ही नहीं चाहता तो सरकार संसद में अपनी बात नहीं रख सकती और न ही जवाब दे सकती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने प्लेकार्ड दिखाना, नारे लगाना और यहाँ तक कि अपशब्द कहना भी आम बात बना दिया है।

जाँच समिति ने खोल कर रख दिये सारे राज, नकदी कांड में पूर्व जज यशवंत वर्मा पर तीनों आरोप साबित हुए

नई दिल्ली, 12 अगस्त। इलाहाबाद हाई कोर्ट के पूर्व न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के सरकारी आवास से बड़ी मात्रा में बिना हिसाब की नकदी मिलने के मामले में संसद की तीन सदस्यीय जांच समिति ने उनके खिलाफ लगाए गए तीनों आरोपों को साबित माना है। बुधवार को संसद के दोनों सदनों में पेश 126 पन्नों की रिपोर्ट में समिति ने न्यायमूर्ति वर्मा की सफाई को टालमटोल भरी, भ्रामक और कुछ हिस्सों में झूठी करार दिया। हालांकि समिति ने यह निष्कर्ष नहीं दिया कि बरामद नकदी व्यक्तिगत रूप से न्यायमूर्ति वर्मा की थी, क्योंकि इसके लिए पर्याप्त प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं मिले।

हम आपको याद दिला दें कि विवाद की शुरूआत 14 मार्च 2025 को दिल्ली स्थित न्यायमूर्ति वर्मा के सरकारी आवास के परिसर में आग लगने के बाद हुई थी। आग बुझाने के दौरान आउटहाउस के एक कमरे में बड़ी मात्रा में बिना हिसाब की नकदी मिली, जिसमें कुछ नोट जले हुए भी थे। घटना के बाद न्यायिक भ्रष्टाचार और वित्तीय अनियमितता के आरोपों को लेकर व्यापक विवाद खड़ा हो गया। न्यायमूर्ति वर्मा ने नकदी की जानकारी होने से इंकार किया और अपने ऊपर लगे आरोपों को खारिज किया।

मामले में भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना द्वारा कराई गई आंतरिक जांच में भी न्यायमूर्ति वर्मा की सफाई को असंतोषजनक माना गया था। इसके बाद उन्हें इस्तीफा देने या न्यायिक पद से हटाने की संवैधानिक प्रक्रिया

का सामना करने को कहा गया। उन्होंने इस्तीफा देने से इंकार किया और रिपोर्ट राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री को भेजी गई। विभिन्न दलों के सांसदों के समर्थन से लोकसभा में उनके खिलाफ प्रस्ताव स्वीकार किए जाने के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने न्यायाधीश (जांच) अधिनियम के तहत तीन सदस्यीय वैधानिक समिति गठित की। इतिहास समिति की अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति अरविंद कुमार ने की। इसमें तत्कालीन बॉम्बे हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश श्रीकृष्ण चंद्रशेखर, जिन्हें बाद में सुप्रीम कोर्ट में पदोन्नत किया गया, और वरिष्ठ अधिवक्ता बीवी आचार्य भी शामिल थे।

जांच समिति ने पाया कि जिस स्टोररूम में नकदी मिली, उसे न्यायमूर्ति वर्मा के नियंत्रण से बाहर बताना स्वीकार्य नहीं है। कमरे में उनके निजी सामान से जुड़ी एक बंद अलमारी होने समेत अन्य परिस्थितियों को देखते हुए समिति ने परिसर और न्यायमूर्ति के बीच पर्याप्त संबंध माना। इस आधार पर पहला आरोप साबित हुआ।

दूसरे आरोप के संबंध में समिति ने जली हुई नकदी और उससे जुड़े भौतिक साक्ष्यों को सुरक्षित नहीं रखे जाने पर गंभीर आपत्ति जताई। समिति को इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला कि न्यायमूर्ति वर्मा ने स्वयं नकदी हटाई थी, लेकिन उसने माना कि उनके संस्थागत नियंत्रण वाले परिसर से मिले महत्वपूर्ण साक्ष्यों को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी से वह मुक्त नहीं हो सकते।

छात्रों के विरोध-प्रदर्शन पर हर सवाल का संसद में दूंगा जवाब: अमित शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा स्पीकर ओम बिरला को एक पत्र लिखा है। पत्र में कहा गया है कि आप जानते हैं कि संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने 'बिजनेस एडवाइजरी कमिटी' की बैठक में सरकार की ओर से NEET परीक्षा को लेकर छात्रों के विरोध-प्रदर्शन पर संसद में चर्चा कराने पर सहमति जताई है।

मैं यह भी बताना चाहूंगा कि विपक्ष की मांग से पहले ही, संसद के मौजूदा सत्र के दौरान 'पब्लिक एग्जामिनेशन्स (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) अमेंडमेंट बिल, 2026' पर चर्चा हुई थी; फिर भी, उस समय सदन में विपक्ष के किसी भी सदस्य ने NEET परीक्षा के बारे में कोई राय नहीं रखी थी।

इसके बावजूद, सरकार इस मुद्दे पर फिर से चर्चा करने के लिए तैयार

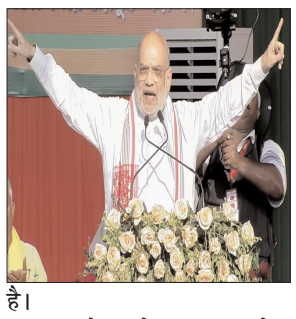

है।

शाह ने आगे कहा कि मेरा आपसे अनुरोध है कि आप विपक्ष से बातचीत करें और आपसी सहमति के आधार पर, आज से ही चर्चा के लिए उतना समय–चाहे दिनों में हो या घंटों में–तय करें जितना आप उचित समझें। मैं इस मुद्दे पर चर्चा में भाग लेने के लिए तय समय पर सदन में मौजूद रहूंगा और विपक्ष द्वारा उठाए गए सभी सवालों का जवाब देने के लिए तैयार हूं।

IND vs SL: भारत के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए श्रीलंकाई टीम घोषित, मेंडिस-निसांका बाहर; डिकवेला की वापसी

कोलंबो, 12 अगस्त। भारत के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के पहले टेस्ट के लिए श्रीलंकाई टीम का एलान हो गया है। श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने मैच के लिए 16 सदस्यीय टीम का एलान किया है। विकेटकीपर-बल्लेबाज निरोसन डिकवेला करीब तीन साल बाद श्रीलंका की टेस्ट टीम में लौटे हैं। 33 वर्षीय डिकवेला ने पिछली बार 2023 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेला था। पहला टेस्ट 15 अगस्त से गॉल में खेला जाएगा। वहीं, दूसरा टेस्ट 23 अगस्त से कोलंबो में खेला जाएगा। श्रीलंका के स्क्वॉड में अनकैप्ड ऑफ स्पिनर केशरा नुवांथा और अनकैप्ड टॉप ऑर्डर बल्लेबाज पसिंदु सूरियाबंदर को भी जगह मिली है। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज दिलशान मदुशंका की भी टीम में वापसी हुई है, जिन्होंने अब तक सिर्फ एक टेस्ट खेला है। वहीं, कुसल मेंडिस और पाथुम निसांका फिलहाल पहले टेस्ट से बाहर हो गए हैं।

डिकवेला की वापसी की सबसे बड़ी वजह कुसल मेंडिस का टीम से बाहर होना है। मेंडिस हैमस्ट्रिंग चोट के कारण चयन के लिए उपलब्ध नहीं हैं। वहीं पाथुम निसांका भी कलाई की सर्जरी से उबर रहे हैं और टीम में नहीं हैं। इन दोनों की गैरमौजूदगी ने श्रीलंका के बल्लेबाजी क्रम में जगह बनाई है। इसी वजह से डिकवेला को 33 साल की उम्र में दोबारा टेस्ट टीम में शामिल किया गया है।

भारत के खिलाफ टेस्ट के लिए श्रीलंका की 16 सदस्यीय टीमः धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), लाहिरु उदारा, निशान मदुश्का, कामिंदु मेंडिस, दिनेश चांदीमल, पसिंदु सूरियाबंदर, सोनल दिनूषा, नीरोजन डिकवेला, रमेश मेंडिस, प्रभात जयसूर्या, केशरा नुवांथा, मिलान रत्नायके, असिथा फर्नांडो, लाहिरु कुमारा, विश्वा फर्नांडो, दिलशान मदुशंका।

भारत की अपडेटेड टेस्ट टीमः शुभमन गिल (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, गुरनूर बरार, देवदत्त पडिक्कल, सारांश जैन, आकिब नबी और सरफराज खान।

DAKS REHAB CENTRE
(PARALYSIS PHYSIOTHERPHY CENTER AND OLD AGE HOME)
Contact us: 9820519851
विल्डिंग नंबर 3, प्लॉट नंबर 3, आदर्श घरकुल सोसायटी सायन कोलीवाडा जीटीबी नगर मुंबई-37
* Stroke/Paralysis/Complete Rehab Centre
* बाहर से आये रोगी और उनके परिजनो के ठहरने कि व्यवस्था
* वृद्ध लोगों के लिए रहने की सुविधा उपलब्ध
* DM/HT/THYROID इन सब से कैसे बचें
* NGO में मिलनेवाली सहायता को लोगों में देना
* चिकित्सा उपकरणो को किराये और बिक्री सुविधा उपलब्ध
* एम्बुलेंस सेवा उपलब्ध
* पोस्ट ऑपरेटिव रिहैब सेंटर
* मरीजों के लिए घर पर 12 और 24 घंटे जीडीए परिचारक
* विशेषज्ञ डॉक्टरो से ऑनलाइन और ऑफलाइन परामर्श की सुविधा उपलब्ध
* मासिक ईएमआई के आधार पर व्यक्तीयों, परिवारो और माता-पिता के लिए स्वास्थ्य निती की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध

TIWARI'S SARASWATI CLASSES
Since 1992
Parents' First Choice for 34+ Years
Prof. Dr. Dayanand Tiwari
Founder & Academic Director
ADMISSIONS OPEN
9th | 10th | 11th | 12th SCIENCE
NEET | JEE | MHT-CET
10 DAYS FREE DEMO
Attend Classes • Experience Our Teaching
Take Admission After Satisfaction
(No Hidden Conditions)
✓ 34+ Years of Academic Excellence
✓ Experienced & Dedicated Faculty
✓ Personal Attention
✓ Printed Notes & Regular Tests
✓ Strong Foundation for Boards & Competitive Exams
Santacruz Branch
101 Sai Chambers, Opp. Santacruz Railway Station (East), Near Depot, Santacruz (E), Mumbai-400055
Sion Branch
Opp. SIES College (Old), Near Gurukripa Hotel, Sion (West), Mumbai
Limited Seats / Small Batch Size
CALL NOW:
7738007373

NEW LIGHT CLASSES
TRADITION OF EXCELLENCE
2nd Floor, Sheetal Bldg. Near Diamond Talkies, L. T. Road, Borivali (West) Mumbai - 400 092 Maharashtra
ADMISSIONS OPEN
ALL OVER INDIA
ENROLL NOW

SMART CLASSROOM
(ONLINE/OFFLINE)
Courses Offered
● Std. XI & XII (Sci.)
● NEET
● JEE (Main & Advance)
● MHT-CET
● Polytechnic & Engg
● Physics and Maths (ICSE, CBSE, ISC)
M: 9833240148 | E: edu@newlightclasses.com | W: www.newlightclasses.com

विश्व अंगदान दिवस (13 अगस्त 2026) पर विशेष

अंगदान की संस्कृति ही मानवता को नई दिशा दे सकती है

-ललित गर्ग

मनुष्य जीवनभर अपने लिए बहुत कुछ अर्जित करता है-धन, संपत्ति, प्रतिष्ठा, संबंध और सुविधाएँ। लेकिन जीवन की अंतिम घड़ी में इन सबका महत्त्व समाप्त हो जाता है। तब यदि हमारे शरीर का कोई अंग किसी दूसरे मनुष्य की धड़कन बन जाए, हमारी आँखें किसी अंधेरे जीवन में रोशनी भर दें, हमारा यकृत या गुर्दा किसी परिवार के बुझते चिराग को फिर से जला दे, तो इससे बड़ी जीवन-सार्थकता और क्या हो सकती है? अंगदान मृत्यु के बाद भी जीवन को जारी रखने की वह मानवीय संभावना है, जो मनुष्य को केवल अपने लिए जीने वाले प्राणी से उठाकर मानवता के लिए जीने वाला बना देती है। विश्व अंगदान दिवस हमें इसी महान विचार से जोड़ता है। आज आवश्यकता केवल अंगदान के बारे में जानकारी देने की नहीं, बल्कि हमारी सोच बदलने की है। हमें यह प्रश्न अपने आप से पूछना होगा कि जिस शरीर को मृत्यु के बाद पंचतत्व में विलीन होना है, उसके उपयोगी अंग यदि किसी दूसरे व्यक्ति को जीवन दे सकते हैं तो उन्हें अपने साथ मिट्टी में मिला देना अधिक सार्थक है या किसी की साँसों का हिस्सा बना देना? मृत्यु निश्चित है, लेकिन मृत्यु के बाद भी किसी के जीवन का कारण बनना हमारे हाथ में है।

भारत की सांस्कृतिक स्मृति में शरीर और जीवन के महान त्याग की परंपरा बहुत पुरानी है। महर्षि दधीचि की कथा इसका सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। पौराणिक परंपरा के अनुसार जब देवताओं को असुरों से संघर्ष के लिए ऐसे अस्त्र की आवश्यकता हुई जिसे दधीचि की अस्थियों से बनाया जा सके, तब महर्षि दधीचि ने लोककल्याण के लिए अपना शरीर ही त्याग दिया। उनकी अस्थियों से वज्र बनाया गया और उससे जनकल्याण की रक्षा हुई। यह कथा आधुनिक अर्थों में अंगदान की चिकित्सकीय प्रक्रिया नहीं है, लेकिन अपने शरीर को समाज और सृष्टि के कल्याण के लिए समर्पित कर देने की भारतीय त्याग-चेतना का अत्यंत शक्तिशाली प्रतीक अवश्य है। भारत के राष्ट्रपति सचिवालय ने भी अंग एवं देहदान की भारतीय परंपरा को समझाते हुए महर्षि दधीचि के इस प्रसंग का उल्लेख किया है। हमारी परंपरा में राजा शिवि की कथा भी त्याग और जीव-दया की अद्भुत मिसाल है। एक कबूतर की रक्षा के लिए उन्होंने अपने शरीर का मांस तक देने की तत्परता दिखाई। चाहे ये प्रसंग धार्मिक आख्यान हों, लेकिन इनके भीतर छिपा संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है-अपने जीवन और शरीर को केवल अपनी निजी संपत्ति न समझना, बल्कि उसे व्यापक जीवन के कल्याण से जोड़ना। जैन दर्शन का सूत्र परस्परोपग्रहो जीवानाम् भी यही बताता है कि जीव एक-दूसरे के उपकार के लिए हैं। अंगदान इस विचार का आधुनिक वैज्ञानिक रूप कहा जा सकता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने इस मानवीय भावना को वास्तविक जीवन बचाने की शक्ति प्रदान कर दी है। वर्ष 1954 में दुनिया का पहला सफल मानव किडनी प्रत्यारोपण हुआ। रोनाल्ड ली हेरिक ने अपनी एक किडनी अपने जुड़वां भाई रिचर्ड को दान की थी। यह घटना चिकित्सा इतिहास में एक ऐसी क्रांति की शुरुआत बनी, जिसने आगे चलकर अंग प्रत्यारोपण को लाखों लोगों के लिए जीवन की आशा बना दिया। इसके बाद 1967 में मानव हृदय प्रत्यारोपण की सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि चिकित्सा विज्ञान मनुष्य की मृत्यु और जीवन के बीच खड़ी कई दीवारों को तोड़ सकता है। भारत ने भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय यात्रा की है। देश में पहला सफल किडनी प्रत्यारोपण 1 दिसंबर 1971 को चेन्नई के क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर में हुआ था। उस समय शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन भारत में हजारों लोगों के लिए अंग प्रत्यारोपण जीवन का नया द्वार बनेगा। आज चिकित्सा तकनीक इतनी आगे बढ़ चुकी है कि किडनी, लिवर, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय और आंत जैसे अंगों के साथ कॉर्निया, त्वचा, हड्डी और हृदय वाल्व जैसे ऊतकों का भी प्रत्यारोपण संभव है। लेकिन विज्ञान की क्षमता जितनी बढ़ी है, हमारी सामाजिक चेतना उस गति से नहीं बढ़ पाई। यही सबसे बड़ी चुनौती है। भारत में आज भी प्रत्यारोपण की आवश्यकता और उपलब्ध अंगों के बीच बड़ा अंतर है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि 2024 में देश में अंग प्रत्यारोपण की गतिविधि व्यापक रही, लेकिन मृतक दाताओं की संख्या अभी भी आवश्यकता की तुलना में बहुत कम है। इसका अर्थ साफ है-हमारे अस्पतालों में तकनीक है, डॉक्टर हैं, सर्जरी की क्षमता है, लेकिन जीवन बचाने के लिए पर्याप्त अंग नहीं हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए हमें अंगदान को मृत्यु की चर्चा नहीं, जीवन की चर्चा बनाना होगा। परिवारों में इस विषय पर समय रहते बातचीत होनी चाहिए। स्कूलों, विश्वविद्यालयों, धार्मिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों और मीडिया को मिलकर ऐसी वातावरण-निर्मिति करनी होगी जिसमें अंगदान सुनते ही भय नहीं, बल्कि करुणा और जीवन बचाने का भाव पैदा हो।

आज भी अनेक लोग सोचते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर को क्षति पहुँचाना धर्म के विरुद्ध है। कुछ लोगों को अगले जन्म की चिंता होती है, कुछ को शरीर के साथ होने वाली चिकित्सा प्रक्रिया का भय होता है और कुछ परिवार अंतिम समय में मानसिक रूप से इतने टूट जाते हैं कि अंगदान का निर्णय नहीं ले पाते। इन भ्रमों का समाधान टकराव से नहीं, संवाद, संवेदना और वैज्ञानिक जानकारी से होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझनी होगी कि अंगदान किसी पर थोपा जाने वाला धार्मिक या सामाजिक कर्तव्य नहीं है। यह एक स्वैच्छिक, नैतिक और मानवीय निर्णय है, जिसे व्यक्ति को विश्वसनीय चिकित्सा एवं कानूनी जानकारी के आधार पर लेना चाहिए। लेकिन यदि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से यह संकल्प करता है कि मृत्यु के बाद उसके उपयोगी अंग किसी जरूरतमंद को मिलें, तो वह अपने जीवन की अंतिम घड़ी को भी मानवता के उत्सव में बदल सकता है।

भारत में अंगदान की प्रेरक घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं। हाल ही में नागपुर में 52 वर्षीय शिक्षक कोंडबा दत्तात्रेय मडावी मृतक अंगदान करने वाले 200वें दाता बने, उनके अंगों से तीन लोगों को नया जीवन मिला। ऐसी घटनाएँ हमें बताती हैं कि अंगदान कोई दूर की आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि हमारे आसपास घटने वाली वास्तविक जीवन-बचाने वाली प्रक्रिया है। दिल्ली में 70 वर्षीय मृत महिला के गुर्दों का सफल उपयोग कर एक 56 वर्षीय महिला को जीवन की नई उम्मीद मिली-यह घटना यह भी बताती है कि केवल उम्र के आधार पर किसी संभावित दाता के अंगों को अनुपयोगी मान लेना उचित नहीं है, अंतिम निर्णय चिकित्सा स्थिति पर निर्भर करता है। भारत के कुछ राज्यों ने इस दिशा में उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। तेलंगाना में 2024 में मृतक अंगदान की दर राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक रही और उसके जीवनदान कार्यक्रम के माध्यम से हजारों प्रत्यारोपण संभव हुए। तमिलनाडु में भी मृतक अंगदान की व्यवस्था ने अनेक परिवारों को प्रेरित किया है 2026 में एक परिवार ने भाषा की बाधा के बावजूद डिजिटल अनुवाद की मदद से अपने प्रियजन के अंगदान का निर्णय लिया और अनेक मरीजों को जीवन मिला। ये घटनाएँ बताती हैं कि जहाँ संवेदना, व्यवस्था और जागरूकता मिलती हैं, वहाँ मृत्यु भी कई जीवनों को बचाने का माध्यम बन सकती है। अंगदान की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि यह रक्तदान से भी आगे की परोपकार-चेतना है। रक्तदान से हम अपने शरीर की ऐसी चीज देते हैं जिसे शरीर फिर बना लेता है, लेकिन अंगदान में हम मृत्यु के बाद ऐसी अमूल्य संपदा देते हैं जिसका उपयोग किसी दूसरे शरीर को जीवन देने के लिए हो सकता है। इसलिए अंगदान को केवल चिकित्सा की भाषा में नहीं, मानवीय रिश्तों और करुणा की भाषा में समझाना होगा। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि किसी एक दाता का निर्णय कई लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है। इसलिए अंगदान केवल एक व्यक्ति की मदद नहीं, बल्कि कई परिवारों में आशा का संचार है। किसी की आँखों में रोशनी, किसी की छाती में धड़कता हृदय, किसी की सांसों में फेफड़ों की शक्ति और किसी के शरीर में काम करता हुआ नया अंग-यह सब किसी अनजान व्यक्ति की उदारता का परिणाम हो सकता है। इसलिए अंगदान को मृत्यु के बाद शरीर का अंत मानने वाली सोच से बाहर निकालकर मृत्यु के बाद भी जीवन देने की अवधारणा से जोड़ना होगा। मृत्यु अंधेरा है, लेकिन अंगदान उस अंधेरे में जलाया गया दीपक है। एक दीपक स्वयं जलता है, लेकिन उसका प्रकाश दूसरों को दिखाई देता है। इसी तरह दाता संसार से चला जाता है, लेकिन उसके अंग किसी और की सांस, धड़कन या दृष्टि बनकर जीवन को रोशन करते रहते हैं। हमारी सबसे बड़ी संपत्ति वह नहीं जो बैंक में जमा है, न वह जो तिजोरी में बंद है और न वह जो हमारे नाम पर दर्ज है। हमारी सबसे बड़ी संपत्ति वह है जिसका उपयोग हमारे बाद भी किसी जीवन को बचाने में हो सके। इस विश्व अंगदान दिवस पर हमें केवल यह संकल्प नहीं लेना चाहिए कि अंगदान करेंगे, बल्कि इससे एक कदम आगे बढ़कर यह संकल्प लेना चाहिए कि अंगदान के बारे में अपने परिवार से बात करेंगे, भ्रम दूर करेंगे और समाज में जीवन बचाने वाली इस चेतना को फैलाएँगे। क्योंकि जीवन का अंतिम अध्याय मृत्यु नहीं होना चाहिए। वह किसी दूसरे के जीवन की नई शुरुआत भी बन सकता है। आइए अपने जीवन की अंतिम विरासत मानवता के नाम करें। अंगदान का दीप जलाएँ, ताकि किसी की बुझती जिंदगी में उजाला हो। अपनी मृत्यु को किसी दूसरे की जिंदगी का कारण बनाएँ-क्योंकि इससे सुंदर मृत्यु और इससे सार्थक जीवन शायद ही कोई हो।

ह्रशरीर चला जाए, पर उसकी करुणा जीवित रहे।
साँसें रुक जाएं, पर किसी और की साँसें चलती रहें।
यही अंगदान है, यही मानवता का महादान है।

आजादी की लड़ाई में सिंधियों का योगदान, विस्थापन की त्रासदी और नवनिर्माण का इतिहास

अशोक भाटिया

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल भौगोलिक सीमाओं को मुक्त कराने की लड़ाई नहीं था, बल्कि यह देश के प्रत्येक कोने से उपजे राष्ट्रवाद और सामूहिक बलिदान की एक महागाथा थी। इस महागाथा में अखंड भारत के 'सिंध प्रांत' और सिंधी समाज का योगदान अत्यंत गौरवशाली, अद्वितीय और गहरे आत्मोत्सर्ग से भरा रहा है। सिंधु नदी की प्राचीन सभ्यता से सिंचित यह भूमि न केवल व्यापार और संस्कृति का केंद्र थी, बल्कि राष्ट्रभक्ति की चेतना की भी जननी रही है। अंग्रेजों के दमनकारी शासन के खिलाफ सिंध के वीरों ने जिस अदम्य साहस का परिचय दिया, वह भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। सिंधी समुदाय ने न केवल आजादी की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी, बल्कि विभाजन की विभीषिका में अपना सब कुछ खोकर भी भारत माता के प्रति अपनी अटूट निष्ठा को बनाए रखा।

सिंध प्रांत में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ क्रांति की ज्वाला शुरूआत से ही सुलग रही थी। 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश नियंत्रण के बाद से ही स्थानीय स्तर पर प्रतिरोध शुरू हो गया था, जिसने 20वीं शताब्दी के आते-आते एक संगठित राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले लिया। स्वतंत्रता की इस लड़ाई में समाज के हर वर्ग—नेताओं, छात्रों, व्यापारियों और महिलाओं—ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और उनकी शहादत की गाथा हम 1. अमर शहीद हेमू कालानी (सिंध के भगत सिंह) से करते है ।सिंधी समाज के स्वतंत्रता संग्राम का जिक्र जब भी होता है, शहीद हेमू कालानी का नाम सबसे पहले और सबसे आदर के साथ लिया जाता है। अविभाजित भारत के सिंध प्रांत के सक्कर जिले में 23 मार्च 1923 को जन्मे हेमू कालानी बचपन से ही राष्ट्रभक्ति की भावना से ओतप्रोत थे। वे भगत सिंह की वीरता की कहानियों से अत्यधिक प्रभावित थे। मात्र 7 वर्ष की आयु में उन्होंने अपने मित्रों के साथ एक क्रांतिकारी टोली बनाई थी।

वर्ष 1942 में जब महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' का शंखनाद किया, तो किशोर हेमू अपनी छात्र संस्था 'स्वराज सेना' के साथ इस आंदोलन में कूद पड़े। अक्टूबर 1942 में, उन्हें गुप्त सूचना मिली कि ब्रिटिश सेना हथियारों और बारूद से भरी एक विशेष ट्रेन लेकर सिंध के दमन के लिए आ रही है। हेमू कालानी ने अपने साथियों के साथ मिलकर रेलवे ट्रैक की फिश-प्लेटें खोलकर उस ट्रेन को पलटने की साहसिक योजना बनाई। कार्य को अंजाम देते समय ब्रिटिश पहरेदारों ने उन्हें देख लिया। अपने साथियों को सुरक्षित भगाने के बाद हेमू स्वयं पकड़े गए।

जेल में उन्हें भयानक यातनाएं दी गईं ताकि वे अपने सहयोगियों के नाम उगल दें, परंतु इस 19 वर्षीय वीर ने अपने मुंह से एक शब्द भी नहीं निकाला। मार्शल लॉ कोर्ट ने उन्हें मौत की सजा सुनाई। अपनी फांसी के फैसले पर जहां पूरा देश स्तब्ध और दुखी था, वहीं हेमू के चेहरे पर एक अलौकिक मुस्कान थी। 21 जनवरी 1943 को सक्कर जेल में हंसते-हंसते वे फांसी के फंदे पर झूल गए। उनकी इस महान शहादत के कारण उन्हें सिंध का भगत सिंह कहा जाता है।

जयरामदास दौलतराम-सिंध के एक और महान सपूत जयरामदास दौलतराम महात्मा गांधी के अत्यंत विश्वस्त और प्रमुख सहयोगियों में से एक थे। 1915 में डॉ. एनी बेसेंट की 'होम रूल लीग' से जुड़कर अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत करने वाले जयरामदास जी ने गांधीजी के हर बड़े आंदोलन का नेतृत्व सिंध में किया। वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने सिंध में जन-जागृति फैलाई और कई बार जेल गए। कराची में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस की बर्बर गोलीबारी में उनके पैर में गोली लगी थी, लेकिन उन्होंने तिरंगा झुकने नहीं दिया। वे 'हिंदुस्तान टाइम्स' के संपादक भी रहे और अपनी कलम से राष्ट्रवाद की अलख जगाई। आजादी के बाद वे स्वतंत्र भारत के पहले खाद्य और कृषि मंत्री बने और बाद में बिहार व असम के राज्यपाल के रूप में देश की सेवा की।

3. आचार्य जे.बी. कृपलानी- हैदराबाद (सिंध) में जन्मे जीवतराम भगवानदास कृपलानी (आचार्य कृपलानी) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक मुख्य मार्गदर्शक और बौद्धिक स्तंभ थे। चंपारण सत्याग्रह के समय से ही वे गांधीजी के साथ खड़े रहे। असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले कृपलानी जी वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के ऐतिहासिक समय पर 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। उन्होंने देश की राजनीतिक दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. डॉ. चोइथराम गिडवानी और मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी-डॉ. चोइथराम गिडवानी सिंध कांग्रेस के अध्यक्ष थे और उन्होंने देश की खातिर अपनी फलती-फूलती डॉक्टरी की प्रैक्टिस छोड़ दी और असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। वहीं, मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी जैसे क्रांतिकारी नेताओं ने विदेशों में जाकर भारत की आजादी के लिए रणनीतियां बनाईं और ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिला कर रख दिया। इनके अलावा रूपलो कोल्ही जैसे लोकनायकों ने सिंध के थारपारकर क्षेत्र में अंग्रेजों की सेना से 16 वर्षों तक गुरिल्ला युद्ध लड़ा और देश के लिए अपना बलिदान दिया।

सिंधी समाज का योगदान केवल शारीरिक संघर्ष तक सीमित नहीं था। सिंधी समुदाय अपनी व्यापारिक कुशलता के लिए वैश्विक स्तर पर जाना जाता था। जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विदेशों में भारत की मुक्ति के लिए 'आजाद हिंद फौज' का पुनर्गठन किया, तब उन्हें सेना के संचालन के लिए भारी धन की आवश्यकता थी। उस समय सुदूर पूर्व (मलेशिया, सिंगापुर, हांगकांग) और दुनिया के अन्य हिस्सों में स्थापित सिंधी व्यापारियों ने अपनी तिजोरियां नेताजी के लिए खोल दीं। सिंधी उद्योगपतियों और व्यापारियों द्वारा दिया गया यह विशाल वित्तीय सहयोग आजाद हिंद फौज की सफलता का एक मुख्य आधार बना। स्वतंत्रता के बाद आईएनए के वरिष्ठ अधिकारियों ने शहीद हेमू कालानी के परिवार को उनकी देशभक्ति के सम्मान में स्वर्ण पदक भेंट कर इस समाज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की थी। स्वतंत्रता के सूर्य का उदय सिंधी समुदाय के लिए एक ऐसी काली रात लेकर आया, जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी। भारत की आजादी की कीमत सिंधी समाज को अपना सब कुछ देकर चुकानी पड़ी।पंजाब और बंगाल के विपरीत, सिंध प्रांत का कोई विभाजन नहीं हुआ, 1947 के विभाजन समझौते के तहत पूरा का पूरा सिंध प्रांत पाकिस्तान के हिस्से में दे दिया गया। इसके पीछे मुख्य कारण राजनीतिक समीकरण और भौगोलिक परिस्थितियां थीं, जहां गैर-मुस्लिम आबादी अल्पसंख्यक थी, यद्यपि वे आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत सुदृढ़ थे।जब सिंध पाकिस्तान में चला गया, तो वहां रहने वाले हिंदू सिंधियों के सामने अचानक गहरे धार्मिक उत्पीड़न और अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया। रातों-रात स्थितियां इतनी हिंसक और असुरक्षित हो गईं कि सिंधी हिंदुओं के पास अपनी जान और सम्मान बचाने के लिए अपनी पैतृक भूमि को छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

सिंधी समुदाय को अपनी सदियों पुरानी समृद्ध विरासत, जमीनें, हवेलियां, फलते-फूलते व्यापारिक प्रतिष्ठान और पूजनीय सिंधु नदी के तटों को छोड़कर खाली हाथ भागना पड़ा। वे अपने ही देश में 'शरणार्थी' (Refugees) बन गए।विभाजन के समय लाखों सिंधी परिवार पानी के जहाजों और ट्रेनों के जरिए बंबई (मुंबई), गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में पहुंचे। बंबई के पास स्थित सैन्य पारगमन शिविरों, जैसे कल्याण मिलिट्री कैंप (जो बाद में उल्हासनगर बना), में इन परिवारों को रखा गया। बैरकों और तंबुओं के उस कड़े और बंजर जीवन में बुनियादी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं थीं, जहां कभी महलों और समृद्ध हवेलियों में रहने वाले सिंधी श्रेष्ठियों को कतारों में लगकर राशन लेना पड़ता था। वे बिना किसी राज्य या प्रादेशिक भूमि के भारत में दरबदर हुए, क्योंकि भारत के नक्शे पर उनका अपना कोई राज्य (जैसे पंजाबियों के लिए पंजाब या बंगालियों के लिए बंगाल) नहीं बचा था। अपनी जमीन और पहचान खोने के बाद सिंधी समाज ने जो कर दिखाया, वह आधुनिक विश्व इतिहास के सबसे प्रेरणादायी अध्यायों में से एक है। उन्होंने अपनी नियति पर आंसू बहाने के बजाय 'पुरुषार्थ' और 'कठिन परिश्रम' का रास्ता चुना।भारत आने के बाद सिंधी समुदाय ने किसी सरकारी खैरात या अत्यधिक सहायता की प्रतीक्षा नहीं की। उन्होंने छोटे-छोटे व्यापारों, फेरी लगाने और सिलाई-कढ़ाई जैसे कार्यों से नए सिरे से शुरूआत की। अपनी व्यापारिक कुशाग्रता, ईमानदारी और अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर इस समाज ने भारत के व्यापारिक परिदृश्य को बदल कर रख दिया।आज स्थिति यह है कि सिंधी समुदाय भारत की कुल जनसंख्या का मात्र लगभग 1% है, लेकिन देश की अर्थव्यवस्था और सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में इनका योगदान लगभग 20% माना जाता है। भारत में 'ओनरशिप फ्लैट सिस्टम' (सहकारी आवास व्यवस्था) की शुरूआत का श्रेय सिंधी उद्योगपतियों (जैसे रहेजा ब्रदर्स और जेठी सिपहियामलानी) को जाता है, जिसने बंबई जैसे महानगर में आवास की समस्या को हल किया। भाई प्रताप जैसे दूरदर्शी नेताओं ने कच्छ के रेगिस्तान के पास आदिपुर और गांधीधाम जैसे जुड़वां शहरों तथा कांडला बंदरगाह के निर्माण में ऐतिहासिक योगदान दिया।

सिंधी समाज ने न केवल धन कमाया, बल्कि उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा राष्ट्र के सामाजिक उत्थान में लगा दिया। भारत के विभिन्न राज्यों में फैले सिंधी धर्मार्थ ट्रस्टों द्वारा हजारों स्कूल, प्रतिष्ठित कॉलेज (जैसे मुंबई का जय हिंद कॉलेज, आर.डी. नेशनल कॉलेज), तकनीकी संस्थान और अत्याधुनिक अस्पताल (जैसे हिंदुजा अस्पताल, जसलोक अस्पताल , चोइथराम अस्पताल) संचालित किए जा रहे हैं। भारत के कुल चैरिटी फंडों में इस समाज का योगदान 62% के करीब आंका जाता है, जो उनकी परमार्थ भावना को दर्शाता है। भले ही सिंधियों के पास भौगोलिक रूप से अपना कोई विशिष्ट राज्य नहीं है, लेकिन उन्होंने अपनी संस्कृति और पहचान को कभी मरने नहीं दिया। सिंधी समाज के लंबे संघर्षों और देश के प्रति उनके योगदानों के फलस्वरूप 10 अप्रैल 1967 को भारतीय संविधान की 'आठवीं अनुसूची' में सिंधी भाषा को एक आधिकारिक राष्ट्रीय भाषा के रूप में शामिल किया गया। हाल ही में भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा सिंधी देवनागरी और मूल सिंधी लिपि दोनों में भारत के संविधान के अद्यतन संस्करण का विमोचन किया जाना इस समाज की भाषाई और सांस्कृतिक जीवंतता के प्रति राष्ट्र के सम्मान को प्रदर्शित करता है। देश के राष्ट्रगान 'जन गण मन' में आज भी ÷सिंध÷ शब्द पूरी शान के साथ गूंजता है, जो भारत के अस्तित्व के साथ इस समाज के अटूट जुड़ाव का प्रतीक है।

घटता संतोषः आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा संकट

-विक्रम दयाल

सुविधाएँ बढ़ीं, इच्छाएँ बढ़ीं, लेकिन मन का सुकून क्यों घटता चला गया?मनुष्य ने सदियों की यात्रा में जितनी भौतिक प्रगति आज कर ली है, उतनी शायद किसी अन्य कालखंड में नहीं की थी। विज्ञान ने दूरी मिटा दी, तकनीक ने समय को मुट्ठी में कर दिया, बाजार ने वस्तुओं की भरमार कर दी और आधुनिक जीवन ने सुविधाओं के ऐसे साधन उपलब्ध करा दिए, जिनकी कल्पना कुछ दशक पहले तक असंभव लगती थी। आज एक व्यक्ति घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से बात कर सकता है, कुछ ही क्षणों में मनचाही वस्तु मंगा सकता है और अपनी अनेक आवश्यकताओं को तकनीक के माध्यम से पूरा कर सकता है। लेकिन इस चमकती हुई तस्वीर के पीछे एक दूसरा सच भी है—मनुष्य जितना सुविधा-संपन्न होता गया, उतना ही भीतर से असंतुष्ट होता चला गया। आज समस्या यह नहीं है कि हमारे पास कम है। समस्या यह है कि जो हमारे पास है, उससे हमें संतोष नहीं है। एक समय था जब सीमित साधनों में भी परिवार के लोग एक-दूसरे के साथ बैठकर भोजन कर लेते थे। घर छोटा था, लेकिन दिल बड़े थे। साधन कम थे, मगर अपनापन अधिक था। आज मकान बड़े हैं, कमरों में आधुनिक उपकरण हैं, हाथों में महंगे मोबाइल हैं, बैंक खातों में पहले से अधिक धन है, लेकिन परिवार के सदस्यों के बीच संवाद के लिए समय कम पड़ गया है। यही आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा विरोधाभास है। सुविधाएँ बढ़ रही हैं और संतोष घट रहा है। इच्छा का कोई अंत नहीं मनुष्य की आवश्यकताएँ सीमित हो सकती हैं, लेकिन इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती। आवश्यकता पूरी होने के बाद भी इच्छा समाप्त नहीं होती, बल्कि वह एक नई इच्छा को जन्म देती है। पहले साइकिल आवश्यकता थी, फिर मोटरसाइकिल सुविधा बनी, फिर कार प्रतिष्ठा का प्रतीक बनी और अब कार के मॉडल, ब्रांड और आकार भी सामाजिक हैसियत का पैमाना बनने लगे हैं। पहले एक साधारण मोबाइल फोन पर्याप्त था, फिर स्मार्टफोन आया और अब हर नया मॉडल पुराने फोन को बेकार महसूस कराने लगा है। यह केवल वस्तुओं की कहानी नहीं है। यही स्थिति घर, कपड़े, शिक्षा, नौकरी, आय, यात्रा और सामाजिक प्रतिष्ठा तक फैल चुकी है। दूसरे के पास जो है, वह हमें अपने पास कम दिखाई देने लगता है। यहीं से असंतोष जन्म लेता है। तुलना संतोष की सबसे बड़ी शत्रु है। जब मनुष्य अपने जीवन को अपने कल से नहीं, बल्कि दूसरे के आज से तुलना करने लगता है, तब उसके भीतर अभाव की भावना पैदा होने लगती है। उसके पास बहुत कुछ होते हुए भी उसे लगता है कि उसके पास कुछ नहीं है। सोशल मीडिया ने तुलना को घर-घर पहुंचा दिया पहले मनुष्य अपने आसपास के कुछ लोगों से ही तुलना करता था। आज सोशल मीडिया ने उसके सामने हजारों-लाखों लोगों का जीवन रख दिया है। किसी का नया घर, किसी की नई कार, किसी की विदेश यात्रा, किसी का महंगा भोजन, किसी की सफलता, किसी की चमकती तस्वीर—ये सब देखकर व्यक्ति अनजाने में अपने जीवन का मूल्यांकन करने लगता है। लेकिन वह यह भूल जाता है कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाला जीवन अक्सर जीवन का पूरा सच नहीं होता। वहां मुस्कान दिखाई देती है, संघर्ष नहीं। सफलता दिखाई देती है, असफलता नहीं। खुशहाल की तस्वीर दिखाई देती है, भीतर की बेचैनी नहीं। फिर भी मनुष्य दूसरों की दिखाई देने वाली खुशियों की तुलना अपने वास्तविक जीवन से करने लगता है। परिणाम सामने है—ईर्ष्या, हीनता, बेचैनी और असंतोष। आज का मनुष्य दूसरे के सुख को देखकर अपने सुख को छोटा समझने लगा है। यह मानसिकता समाज के लिए गंभीर चुनौती है। बाजार हमें लगातार बताता है—आपके पास कुछ कम है आधुनिक बाजार केवल हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता, वह हमारी नई-नई आवश्यकताएँ भी पैदा करता है। विज्ञापन का संसार हमें बार-बार समझाता है कि हमारे पास जो है वह पर्याप्त नहीं है। आपका फोन पुराना है, कपड़े पुराने हैं, घर पुराना है, वाहन पुराना है, जीवनशैली पुरानी है—और इन सबको बदलना ही आधुनिक होने की पहचान है। बाजार की यह मानसिकता मनुष्य को उपभोक्ता में बदल देती है। वह वस्तुओं का उपयोग करने के बजाय वस्तुएँ उसके जीवन का उपयोग करने लगती हैं। वह अधिक कमाता है ताकि अधिक खरीद सके। अधिक खरीदने के लिए अधिक काम करता है। अधिक काम करने के कारण परिवार से दूर होता है। परिवार से दूर होने के कारण मानसिक तनाव बढ़ता है। तनाव कम करने के लिए फिर बाजार का सहारा लेता है। इस प्रकार एक ऐसा चक्र बन जाता है, जिससे निकलना कठिन हो जाता है। आवश्यकता कम होती है, आकांक्षा बढ़ती जाती है और संतोष पीछे छूटता जाता है। क्या धन ही सुख का अंतिम आधार है? धन जीवन के लिए आवश्यक है। गरीबी को रोमांटिक बनाना उचित नहीं है। सम्मानजनक जीवन के लिए भोजन, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा जरूरी हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या धन की कोई ऐसी सीमा है, जिसके बाद मनुष्य निश्चित रूप से संतुष्ट हो जाता है? अनुभव बताता है कि ऐसा नहीं है। धन सुविधा दे सकता है, लेकिन संतोष नहीं खरीद सकता। महंगा बिस्तर नींद की गारंटी नहीं देता। बड़ा घर परिवार में प्रेम की गारंटी नहीं देता। महंगी दवा स्वास्थ्य की गारंटी नहीं देती। महंगी गाड़ी मन की शांति की गारंटी नहीं देती। और बड़ी संपत्ति जीवन की सार्थकता की गारंटी नहीं देती। इसलिए आर्थिक समृद्धि और मानसिक संतोष को एक ही चीज मान लेना आधुनिक समाज की सबसे बड़ी भूल है। रिश्तों में भी घटता जा रहा है संतोष असंतोष का प्रभाव केवल वस्तुओं तक सीमित नहीं रहा। उसने रिश्तों को भी प्रभावित किया है। आज व्यक्ति रिश्तों में भी अपेक्षाओं की लंबी सूची लेकर प्रवेश करता है। पति-पत्नी एक-दूसरे से बहुत कुछ चाहते हैं। माता-पिता बच्चों से अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहते हैं। बच्चे माता-पिता से अपनी हर आवश्यकता की पूर्ति चाहते हैं। भाई-भाई के बीच संपत्ति और प्रतिष्ठा की तुलना होती है। मित्रता में भी उपयोगिता का तत्व प्रवेश कर रहा है। जहां अपेक्षाएँ बढ़ती हैं, वहां शिकायतें भी बढ़ती हैं। बऔर जहां शिकायतें बढ़ती हैं, वहां अपनापन कमजोर होने लगता है। पहले रिश्ते निभाए जाते थे, आज कई बार रिश्तों का मूल्यांकन किया जाता है—मुझे इससे क्या मिला? यही प्रश्न रिश्तों की आत्मा को कमजोर कर रहा है। नई पीढ़ी पर सफलता का दबाव आज का युवा भी एक अजीब दबाव में जी रहा है। उसे पढ़ाई में सबसे आगे रहना है। नौकरी में सफलता चाहिए। अच्छी आय चाहिए। अपना घर चाहिए। आधुनिक जीवनशैली चाहिए। सामाजिक प्रतिष्ठा चाहिए। सोशल मीडिया पर भी सफल दिखाई देना है। लेकिन सफलता की इस दौड़ में यह प्रश्न पीछे छूट जाता है कि आखिर सफलता किसके लिए? यदि लक्ष्य प्राप्त करने के बाद भी मन शांत नहीं है, यदि उपलब्धियों के बावजूद भीतर खालीपन है, यदि ऊंची इमारत में रहने के बावजूद नींद नहीं आती, यदि बैंक बैलेंस बढ़ने के साथ चिंता भी बढ़ती जाती है—तो हमें अपनी सफलता की परिभाषा पर पुनर्विचार करना होगा। हर दौड़ में सबसे आगे निकल जाना जरूरी नहीं। कभी-कभी जीवन में रुककर यह देखना भी जरूरी होता है कि हम जिस दिशा में दौड़ रहे हैं, वह दिशा सही भी है या नहीं। बुजुर्गों का जीवन हमें संतोष का पाठ पढ़ाता है हमारे घरों के बुजुर्गों की पीढ़ी के पास आधुनिक सुविधाएँ कम थीं, लेकिन उनके पास प्रतीक्षा करने का धैर्य था। वे छोटी-छोटी खुशियों में आनंद खोज लेते थे। घर में सब लोग एक साथ बैठ जाएँ—यह खुशी थी। बच्चे स्वस्थ रहें—यह खुशी थी। फसल अच्छी हो जाए—यह खुशी थी। मेहमान घर आ जाए—यह खुशी थी। त्योहार पर परिवार इकट्ठा हो जाए—यह खुशी थी। आज हमारे पास इनसे कहीं अधिक सुविधाएँ हैं, लेकिन छोटी-छोटी बातों में खुश होने की क्षमता घटती जा रही है। इसका कारण शायद यह है कि हमने सुख को सरल अनुभव न मानकर वस्तुओं से जोड़ दिया है। हमने यह मान लिया है कि नया सामान आएगा तो खुशी आएगी। नया पद मिलेगा तो खुशी आएगी। अधिक पैसा मिलेगा तो खुशी आएगी। लेकिन वस्तु मिलते ही कुछ समय बाद उसका आकर्षण समाप्त हो जाता है और मन फिर किसी नई वस्तु की ओर भागने लगता है। इसे ही इच्छाओं का अंतहीन चक्र कहा जा सकता है। संतोष का अर्थ ठहर जाना नहीं है यहां एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है कि संतोष का अर्थ प्रगति रोक देना नहीं है। संतोष आलस्य नहीं है। संतोष महत्वाकांक्षा का विरोध नहीं है। संतोष यह भी नहीं कहता कि मनुष्य अपने जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास छोड़ दे। संतोष का वास्तविक अर्थ है—प्रयास करते हुए वर्तमान का सम्मान करना। मनुष्य आगे बढ़े, लेकिन वर्तमान को तुच्छ न समझे। अधिक कमाए, लेकिन कम कमाने वाले को छोटा न समझे। बड़ा घर बनाए, लेकिन पुराने घर की स्मृतियों को न भूले। नई तकनीक अपनाए, लेकिन मानवीय संवाद को न छोड़े। सफलता प्राप्त करे, लेकिन सफलता के अहंकार में रिश्तों को न खोए। यही संतुलन जीवन को सुंदर बनाता है। सरकार और समाज की भी जिम्मेदारी घटता संतोष केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है। यह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था से भी जुड़ा प्रश्न है। जब समाज में सफलता का मूल्यांकन केवल धन और उपभोग से होने लगे, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल अधिक वेतन वाली नौकरी बन जाए, जब बच्चों को बचपन से ही प्रतियोगिता की मशीन बना दिया जाए और जब व्यक्ति का सम्मान उसकी मानवीयता के बजाय उसकी आर्थिक स्थिति से तय होने लगे, तब असंतोष बढ़ना स्वाभाविक है। सरकारों को भी विकास की परिभाषा पर विचार करना चाहिए। सिर्फ सड़कें, पुल, इमारतें और बाजार ही विकास के पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। विकास तब सार्थक है जब नागरिक सुरक्षित हो, परिवार स्वस्थ हो, बुजुर्ग सम्मानित हों, युवा आशावान हों, किसान संतुष्ट हो, श्रमिक सम्मान के साथ जीवन जी सके और आम आदमी को भविष्य के प्रति भरोसा हो। देश की प्रगति का वास्तविक पैमाना केवल सकल उत्पादन नहीं, बल्कि नागरिक के चेहरे का संतोष भी होना चाहिए। हमें फिर से छोटी खुशियां तलाशनी होंगी संतोष किसी बाजार में बिकने वाली वस्तु नहीं है। उसे खरीदा नहीं जा सकता। उसे भीतर विकसित करना पड़ता है। सुबह की धूप में कुछ क्षण बैठना, परिवार के साथ बिना मोबाइल के बातचीत करना, किसी जरूरतमंद की सहायता करना, अपने माता-पिता या बुजुर्गों के पास बैठना, बच्चों की बात ध्यान से सुनना, प्रकृति के बीच समय बिताना, अपने पास उपलब्ध चीजों के लिए कृतज्ञ होना—ये छोटी बातें जीवन में बड़े परिवर्तन ला सकती हैं। मनुष्य को कभी-कभी अपनी इच्छाओं की सूची छोटी करनी चाहिए और अपनी कृतज्ञता की सूची बड़ी।जिस दिन हम यह गिनना शुरू कर देंगे कि हमारे पास क्या-क्या है, उसी दिन से अभाव की भावना कम होने लगेगी। संतोष भीतर का दीपक है जीवन में सुख की तलाश बाहर करना आसान है। भीतर करना कठिन है। बाहर की दुनिया कहती है—और चाहिए। अंतरात्मा कहती है—जो मिला है, उसे भी पहचानो। बाजार कहता है—पुराना छोड़ो, नया खरीदो। जीवन कहता है—जो संबंध मिले हैं, उन्हें संभालो। दुनिया कहती है—दूसरे से आगे निकलो। अनुभव कहता है—अपने कल से बेहतर बनो। यही दोनों आवाजों के बीच का अंतर समझना आज आवश्यक है। संतोष जीवन की गति को रोकता नहीं, बल्कि उसकी दिशा को सही करता है। जिस व्यक्ति के भीतर संतोष है, वह कम में भी प्रसन्न रह सकता है और अधिक मिलने पर अहंकारी नहीं होता। लेकिन जिसके भीतर संतोष नहीं है, वह संसार की सारी संपत्ति प्राप्त करके भी स्वयं को निर्धन महसूस कर सकता है। निष्कर्ष : असली संकट साधनों का नहीं, मन का है आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा संकट यह नहीं है कि मनुष्य के पास साधन कम हैं। संकट यह है कि साधन बढ़ने के साथ उसकी इच्छाएँ इतनी बढ़ गई हैं कि उपलब्धियां भी उसे अपर्याप्त लगने लगी हैं। हमने जीवन को आसान बनाने के लिए मशीनें बनाई थीं, लेकिन कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हीं मशीनों ने हमें बेचैन कर दिया? हमने समय बचाने के लिए तकनीक बनाई थी, लेकिन आज हमारे पास अपनों के लिए समय ही नहीं है। हमने सुख-सुविधाओं के लिए धन कमाया, लेकिन कई बार उसी धन को कमाने की दौड़ ने सुख छीन लिया। इसलिए आज आवश्यकता किसी नई वस्तु की नहीं, नई दृष्टि की है। हमें अपने बच्चों को केवल आगे बढ़ना नहीं, रुककर मुस्कुराना भी सिखाना होगा। उन्हें केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग भी सिखाना होगा। उन्हें केवल सफलता नहीं, संतोष का मूल्य भी समझाना होगा। क्योंकि अंततः जीवन की महानता इस बात में नहीं कि हमने कितना पाया, बल्कि इस बात में है कि जो पाया, उसे कितने संतोष, प्रेम और कृतज्ञता के साथ जी पाए। आज यदि मनुष्य अपने भीतर एक बार फिर यह कह सके—ह्लमेरे पास जो है, वह कम नहीं; जो नहीं है, उसके लिए प्रयास करूंगा, लेकिन जो है, उसकी खुशी भी मनाऊंगा।ह्व तो शायद आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी बीमारी—घटते संतोष—का उपचार शुरू हो सकेगा। संतोष कोई कमजोरी नहीं, जीवन की परिपक्वता है। और जिस दिन मनुष्य दूसरों की थाली में झांकना छोड़कर अपनी थाली के अन्न के लिए कृतज्ञ होना सीख जाएगा, उस दिन उसे समझ आएगा कि सुख हमेशा अधिक पाने में नहीं, जो मिला है उसमें सुख खोज पाने की कला में भी छिपा होता है। यही संतोष जीवन का वह मौन धन है, जिसे पाने वाला व्यक्ति संसार का सबसे समृद्ध मनुष्य हो सकता है।

रईस हाईस्कूल में विद्यार्थियों ने शब्दकोश से सीखे शब्दों के अर्थ

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। रईस हाईस्कूल एंड जूनियर कॉलेज, भिवंडी में कक्षा छठी के विद्यार्थियों के लिए शब्दकोश देखने और शब्दों के अर्थ खोजने की व्यावहारिक शैक्षणिक गतिविधि स्कूल की लाइब्रेरी में आयोजित की गई। यह गतिविधि उर्दू भाषा की पाठ्यपुस्तक बाल भारती के पाठ आइए शब्दकोश देखें पर आधारित थी। उर्दू विषय के शिक्षक फैज फकीह ने विद्यार्थियों को शब्दकोश के सही उपयोग की जानकारी दी। विद्यार्थियों ने वर्णमाला के क्रम से विभिन्न शब्दों को खोजकर उनके अर्थ और सही उच्चारण की जानकारी प्राप्त की। इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों में शब्द-भंडार बढ़ाने, भाषा समझने, स्व-अध्ययन और नए शब्दों का अर्थ स्वयं खोजने की क्षमता विकसित हुई। फैज फकीह ने कहा कि गतिविधि आधारित शिक्षा से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सीखने की रुचि बढ़ती है। विद्यार्थियों ने इस गतिविधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्कूल प्रशासन ने भी व्यावहारिक शिक्षा के इस प्रयास की सराहना की।

शंकर सिल्क मिल में ETP बायपास से रंगीन केमिकलयुक्त पानी छोड़ने का खुलासा

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी मनपा के महापौर नारायण चौधरी ने पर्यावरण विभाग के उपायुक्त बालकृष्ण क्षीरसागर के साथ 10 अगस्त को शंकर सिल्क मिल प्रा. लि. का अचानक निरीक्षण किया। इस दौरान कंपनी के Effluent Treatment Plant (ETP) में बायपास व्यवस्था पाई गई और इसके माध्यम से बिना प्रक्रिया किया हुआ रंगीन केमिकल युक्त पानी मनपा की मलनिस्सारण वाहिनी में छोड़े जाने की बात सामने आई। मनपा के पर्यावरण विभाग ने मौके का पंचनामा कर डाईंग के पानी का नमूना जांच के लिए भेजा है। साथ ही जलापूर्ति एवं स्वच्छता विभाग ने मलनिस्सारण वाहिनी और डिस्चार्ज प्वाइंट का भी निरीक्षण किया।मनपा प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच रिपोर्ट और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर नियमानुसार कार्रवाई करने की बात कही है। पर्यावरण संबंधी कार्रवाई के लिए महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडल को भी जानकारी दी गई है। महापौर ने बिना प्रक्रिया किए औद्योगिक केमिकलयुक्त पानी छोड़ने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

बोईसर डाकघर के लिए किराये पर जगह लेने हेतु 27 अगस्त तक सीलबंद प्रस्ताव आमंत्रित

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के बोईसर शहर में डाकघर के लिए लगभग 1,274 वर्ग फुट जगह किराये पर उपलब्ध कराने हेतु अधीक्षक डाकघर, पालघर विभाग की ओर से इच्छुक व्यक्तियों, संस्थाओं एवं बिल्डरों से सीलबंद प्रस्ताव आमंत्रित किये गये हैं। डाक विभाग द्वारा किराये पर ली जाने वाली जगह के प्रस्ताव में उपलब्ध क्षेत्रफल, अपेक्षित मासिक किराया, जगह का पूरा विवरण तथा लागू नियम एवं शर्तों का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है। इच्छुक व्यक्ति, संस्था अथवा बिल्डर अपने प्रस्ताव 27 अगस्त 2026 को दोपहर 3.30 बजे तक अधीक्षक डाकघर, पालघर विभाग के कार्यालय में सीलबंद लिफाफे में जमा कर सकते हैं। प्रस्ताव में जगह का कुल क्षेत्रफल, अपेक्षित मासिक किराया, स्थान का पूरा विवरण तथा जगह उपलब्ध कराने से संबंधित अन्य आवश्यक जानकारी एवं शर्तों का स्पष्ट उल्लेख करना होगा। अधिक जानकारी के लिए अधीक्षक डाकघर, पालघर विभाग, मीरा रोड-401107 के दूरभाष क्रमांक 022-28114232 पर संपर्क किया जा सकता है। सोमवार से शुक्रवार तक कार्यालयीन समय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा सब पोस्टमास्टर, बोईसर डाकघर - 401504 से सोमवार से शनिवार तक सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे के बीच संपर्क किया जा सकता है।

श्रेया बेड़िया ने मिस यूनिवर्स इंडिया के ताज की प्रबल दावेदार के रूप में मध्य प्रदेश को राष्ट्रीय मंच पर दिलाई नई पहचान

मुंबई। मिस यूनिवर्स इंडिया प्रतियोगिता जैसे-जैसे अनवाइंड रिजॉर्ट, इंदौर में आगे बढ़ रही है, मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रहीं राष्ट्रीय फाइनलिस्ट श्रेया बेड़िया अपने राज्य की संस्कृति, विरासत और पहचान को देश के सबसे प्रतिष्ठित पेजेंट मंचों में से एक पर गर्व के साथ प्रस्तुत कर रही हैं। फैशन, उद्देश्य, उद्यमिता और सामाजिक उत्तरदायित्व का अनूठा संगम उनकी यात्रा को मिस यूनिवर्स इंडिया के प्रतिष्ठित ताज की एक प्रबल दावेदार के रूप में स्थापित कर रहा है। श्रेया के लिए इस वर्ष की प्रतियोगिता विशेष महत्व रखती है। प्रतियोगिता का एक बड़ा हिस्सा उनके गृह नगर इंदौर में आयोजित हो रहा है, जिससे मंच पर उनका हर कदम, हर प्रस्तुति और हर क्षण अपने शहर और राज्य को समर्पित एक गौरवपूर्ण अभिव्यक्ति बन गया है। मिस यूनिवर्स इंडिया के मंच पर मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व करना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान है। इस यात्रा का मेरे अपने शहर इंदौर में होना इसे और भी भावनात्मक बना देता है। मंच पर मेरा हर कदम अपने साथ मेरे प्रदेश के सपनों, संस्कृति और आत्मा को लेकर चलता है। फैशन के प्रति अपनी विशिष्ट दृष्टि के लिए पहचानी जाने वाली श्रेया ने अपने पेजेंट परिधानों को मध्य प्रदेश की समृद्ध कलात्मक विरासत को समर्पित किया है। उनके डिजाइन बाघ प्रिंट, महेश्वरी वस्त्रों की कालातीत सुंदरता और बाघ गुफाओं की प्राचीन भित्ति चित्रकला से प्रेरित हैं, जिन्हें उन्होंने आधुनिक पेजेंट कूत्योर के माध्यम से नए रूप में प्रस्तुत किया है।

शिवतेज मित्र मंडल द्वारा आयोजित दिव्य कांवड़ यात्रा संपन्न

- हर-हर महादेव के जयघोष से गूंजा धर्मनगरी आजाद नगर
- सूर्या नदी से जल लाकर काशी विश्वनाथ मंदिर में किया भोलेनाथ का जलाभिषेक

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। पवित्र सावन मास के दूसरे सोमवार 10 अगस्त 2026 को बोईसर शहर के धर्मनगरी आजाद नगर में भक्ति और आस्था का अद्भुत नजारा देखने को मिला। शिवतेज मित्र मंडल एवं केवट सामाजिक सेवा फाउंडेशन के तत्वावधान में भव्य दिव्य कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा में गुजरात, मुंबई, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों से आये सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

काशी विश्वनाथ कांवड़ यात्रा एवं शिव मंदिर-शीतला माता मंदिर के संस्थापक अध्यक्ष तुलसी राम केवट के मार्गदर्शन में आयोजित कांवड़ यात्रा का शुभारंभ नारियल फोड़कर एवं फीता काटकर किया गया। इसके बाद शिवभक्त कांवड़ लेकर सूर्या नदी की ओर रवाना हुए। नदी तट पर श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से पवित्र जल भरा और कांवड़ में जल लेकर वापस धर्मनगरी आजाद नगर स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर-शीतला माता मंदिर पहुंचे। कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने पूरे रास्ते हर-हर महादेव और बोल बम के जयघोष लगाये। इससे पूरा क्षेत्र भक्तिमय वातावरण में सराबोर हो गया। मंदिर पहुंचने के बाद श्रद्धालुओं ने भगवान भोलेनाथ का पवित्र जल से अभिषेक किया। जलाभिषेक का सिलसिला सुबह से शुरू होकर शाम तक चलता रहा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने मंदिर पहुंचकर भगवान शिव के दर्शन किये और जलाभिषेक कर सुख-समृद्धि एवं परिवार की मंगलकामना की। कांवड़ यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह और धार्मिक आस्था देखने को मिली। यात्रा के दौरान अतिथियों एवं गणमान्य नागरिकों का आयोजकों की ओर से पुष्पगुच्छ एवं श्रीफल देकर सम्मान किया गया। राजीव रंजन सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कांवड़ यात्रा शांतिपूर्ण एवं सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इनमें गणेश सिंह राणा, निमोही यादव, बंसी गुप्ता, मायाराम गुप्ता, संजय मास्टर, धर्मेंद्र शाह, नरेंद्र सिंह, सर्वेश सिंह, संजय बावरे, राजीव राय, बजरंग राय, राकेश राय, संतोष साहनी, राजू सिंह, शिव कुमार सिंह, विनय पांडे, पवन यादव, सोनू जहांगीर, राजू पाठक, सुरेश पाण्डेय, दिलीप सिंह, सुमित ठाकुर, आनंद महतो, अशोक तंवर, शैलेन्द्र माझी, पप्पू सिंह मैनेजर, पंडित जीतू उपाध्याय, पंडित चंद्र मोल एवं नंदकिशोर यादव सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। कावड़ यात्रा के दौरान एक दंत संस्था, रेनू मोदी, पप्पू सिंह मैनेजर, राहुल सिंह व अन्य समाजसेवियों द्वारा कावड़ियों की सेवा हेतु चाय, बिस्कुट, केला, पेयजल आदि की भरपूर व्यवस्था की गई थी।

कांवड़ यात्रा को लेकर पुलिस प्रशासन की ओर से सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किये गये थे। पुलिस एवं स्वयंसेवकों की निगरानी में यात्रा शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। आयोजन के सफल समापन पर आयोजकों ने पुलिस प्रशासन, स्वयंसेवकों, सामाजिक संगठनों तथा यात्रा में शामिल सभी श्रद्धालुओं के प्रति आभार व्यक्त किया। सावन के दूसरे सोमवार पर आयोजित इस भव्य कांवड़ यात्रा ने धर्मनगरी आजाद नगर को पूरी तरह शिवमय कर दिया।

मीरा भायंदर के नागरिकों की समस्याओं का निराकरण मेरी प्राथमिकता : रवि व्यास

भायंदर (उत्तरशक्ति)। मीरा भायंदर शहर के नागरिकों की समस्याओं का निराकरण और उन्हें बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना मेरी पहले प्राथमिकता है। सोसाइटी की विभिन्न समस्याओं को लेकर मुलाकात करने आए प्रतिनिधिमंडल से की गई बातचीत के बाद सभागृह नेता एडवोकेट रवि व्यास ने उपरोक्त बातें कही। उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय और सोसाइटी से जुड़ी समस्याओं का निराकरण करना उनकी बड़ी प्राथमिकता है। विभिन्न सोसाइटी से आए प्रतिनिधिमंडल ने रवि व्यास का सम्मान भी किया। राजनीति के क्षेत्र में एडवोकेट रवि व्यास जनता के बीच सबसे लोकप्रिय हैं। खासकर युवाओं की पहली पसंद माने जाते हैं।

महानगरपालिका चुनाव के बाद लोगों को पूरी उम्मीद थी कि वे मीरा भायंदर का महापौर बनेंगे। लोगों को पूरा विश्वास है कि अगले टर्म में वे महापौर जरूर बनेंगे।

भूकंप से बचाव हेतु एनडीआरएफ द्वारा चलाया गया जागरूकता अभियान

जव्हार-विक्रमगढ़ में दिए सुरक्षा के टिप्स

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। पालघर जिले में हाल के दिनों में भूकंप के हल्के झटके महसूस किये जाने की पृष्ठभूमि में नागरिकों को भूकंप से बचाव व आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ), आरआरसी पालघर की ओर से मंगलवार को जव्हार तथा विक्रमगढ़ तहसील के विभिन्न क्षेत्रों में भूकंप जनजागरूकता एवं मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अभियान के तहत डेंगाचीमेट (जव्हार), शासकीय आश्रमशाला कन्हेरे (विक्रमगढ़), हाड़े (जव्हार) तथा भारतीय विद्यापीठ, जव्हार में विद्यार्थियों, शिक्षकों व ग्रामीणों को भूकंप के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों, सुरक्षा उपायों और आपदा से पहले की तैयारियों की जानकारी दी गई। एनडीआरएफ के जवानों ने भूकंप के दौरान अपनाये जाने वाले ड्रॉप , कवर एंड होल्ड ऑन सुरक्षा उपाय का प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया। लोगों को बताया गया कि भूकंप के झटके महसूस होने पर घबराने के बजाय मजबूत टेबल या फर्नीचर के नीचे सुरक्षित शरण लें, सिर को सुरक्षित रखें और फर्नीचर को मजबूती से पकड़े रहें इसके अलावा भूकंप के बाद सुरक्षित स्थान पर जाने, अफवाहों पर विश्वास नहीं करने तथा प्रशासन एवं आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से जारी निदेर्शों का पालन करने की अपील भी की गई। कार्यक्रम में विद्यार्थियों, शिक्षकों, एवं स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। एनडीआरएफ टीम ने भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा के समय घबराने के बजाय संयम और सतर्कता के साथ स्थिति का सामना करने पर जोर दिया। जिला प्रशासन और जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, पालघर के समन्वय से आयोजित इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीण एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में आपदा तैयारियों को मजबूत करना तथा नागरिकों को भूकंप सुरक्षा के व्यावहारिक उपायों से अवगत कराना रहा। बढ़ती भूकंपीय गतिविधियों के मद्देनजर इस तरह के जागरूकता कार्यक्रम नागरिकों की सुरक्षा और आपदा सज्जता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माने जा रहे हैं। विवेकानंद कदम, आपदा प्रबंधन अधिकारी, जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, पालघर।

मुंबई के कुर्ला में लैंड स्लाइड के मलबे से जिंदा निकली सायरा बानो, राहत कार्य जारी

मुंबई (उत्तरशक्ति)। शहर के कुर्ला इलाके में बुधवार तड़के भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन (लैंडस्लाइड) ने हर किसी को झकझोर कर रख दिया है। चिराग नगर स्थित गौसिया चॉल में जब यह हादसा हुआ, उस समय चारों तरफ चीख-पुकार मच गई थी। स्थानीय निवासी अहमद हुसैन अंसारी ने उस डरावने पल को याद करते हुए बताया कि तड़के करीब 3:30 बजे जब वे सो रहे थे, तो उन्हें कुछ लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी।

अहमद हुसैन अंसारी ने मीडिया को बताया, 'सोते समय मुझे आवाज आई तो पहले लगा कि कोई झगड़ा हुआ होगा। जब उठकर बाहर देखा, तो वहां भगदड़ जैसी स्थिति थी और लोग चिल्ला रहे थे- 'पहाड़ गिर गया है, भागो-भागो! जब मैं बाहर आया, तो मैंने देखा कि वाकई एक पहाड़ी का हिस्सा ढह चुका था।'

इस भीषण हादसे में मलबे से सुरक्षित निकाली गईं सायरा बानों ने अपनी आपबीती सुनाते हुए बताया कि उनका पूरा परिवार मलबे के नीचे दब गया था। सायरा ने कहा, 'यह घटना हमारे साथ तड़के करीब 3:30 बजे हुई। पहाड़ ढह गया और हम उसके नीचे दब गए। पूरा घर हमारे ऊपर गिर गया और सब कुछ तबाह हो गया। हम यहां 30 साल से रह रहे हैं, लेकिन ऐसा हादसा कभी नहीं हुआ था।' उन्होंने सरकार से सुरक्षित स्थान पर पुनर्वास की गुहार लगाई है।

वाणगांव रोजगार मेले में युवाओं का दिखा उत्साह, 497 रिक्त पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया में 160 उम्मीदवारों का प्राथमिक चयन

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वाणगांव में आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय रोजगार मेले को युवाओं का उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिला। विभिन्न कंपनियों में उपलब्ध 497 रिक्त पदों के लिए आयोजित भर्ती प्रक्रिया में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में उम्मीदवार शामिल हुए। इनमें से 160 उम्मीदवारों का प्राथमिक चयन किया गया। जिला कौशल विकास, रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन केंद्र, पालघर, मॉडल करियर सेंटर तथा पद्मश्री जीव्या सोमा मशे शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, वाणगांव, तहसील डहाणू के संयुक्त तत्वावधान में इस रोजगार मेले का आयोजन किया गया था। रोजगार मेले में एसएससी, एचएससी, बी.एससी., एम.एससी., मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल डिप्लोमा, बैचलर ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग तथा आईटीआई जैसी शैक्षणिक एवं तकनीकी योग्यता रखने वाले उम्मीदवारों के लिए विभिन्न कंपनियों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये गये। पालघर जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में युवाओं ने मेले में पहुंचकर कंपनियों की भर्ती प्रक्रिया में हिस्सा लिया। इसके चलते वाणगांव परिसर में दिनभर रोजगार की तलाश में आये युवाओं की अच्छी-खासी भीड़ देखने को मिली। मेले में उपलब्ध शेष रिक्त पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया अभी जारी है। पात्र एवं इच्छुक उम्मीदवार जिला कौशल विकास, रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन केंद्र, पालघर से संपर्क कर रोजगार के अवसरों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह अपील सहायक आयुक्त रेणुका तम्मलवार तथा कौशल विकास, रोजगार एवं उद्यमिता मार्गदर्शन अधिकारी रवींद्र सुरवसे ने की है। रोजगार मेले के माध्यम से कंपनियों और नौकरी की तलाश कर रहे युवाओं को एक ही मंच पर लाने से उम्मीदवारों का समय एवं खर्च बचने के साथ ही नौकरी तलाशने की प्रक्रिया भी आसान हुई है। रोजगार मेले के सफल आयोजन के लिए पद्मश्री जीव्या सोमा मशे शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य सचिन संखे सहित संस्था के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विशेष मेहनत की।

पत्रकारिता में 20 वर्षों की उल्लेखनीय सेवा के लिए शरद धुमाल को मानद डॉक्टरेट उपाधि

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। गोरसई गांव के भूमिपुत्र तथा किसान परिवार से आने वाले वरिष्ठ पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता शरद काशिनाथ धुमाल को पत्रकारिता एवं मीडिया क्षेत्र में 20 वर्षों से किए जा रहे उल्लेखनीय कार्य के लिए नालंदा एन.आई.आई.आर.सी. यूनिवर्सिटी इंडिया की ओर से मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई। पुणे स्थित पत्रकार भवन में आयोजित समारोह में गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। शरद धुमाल ने दैनिक कोकण सकाल, दैनिक लोकनायक, दैनिक नवराष्ट्र, तहलका समाचार सहित विभिन्न समाचार पत्रों में वार्ताहर के रूप में कार्य करते हुए जनहित से जुड़े अनेक मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है। उन्होंने समाचारों और लेखों के माध्यम से समस्याओं को प्रशासन के सामने लाकर उनके समाधान के लिए लगातार प्रयास किए। भिवंडी शहर में आवारा कुत्तों की समस्या, ग्रामीण क्षेत्रों में मेडिकल कचरा, परिवहन विभाग में भ्रष्टाचार, सड़क एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य, दूषित पानी, कांदळवन अतिक्रमण, टोल नाका, टोरेंट पावर कंपनी से जुड़े मुद्रांक शुल्क सहित अनेक जनहित के मुद्दों पर उन्होंने लगातार आवाज उठाई। साथ ही बैंकों, पेट्रोल पंपों, पतपेढ़ियों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर शौचालय तथा स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए हिरकणी कक्ष जैसी सुविधाओं की आवश्यकता को लेकर भी उन्होंने समाचारों एवं पत्रव्यवहार के माध्यम से प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया। प्रदूषण नियंत्रण के साथ-साथ पोंगांव-म्हसकर पाडा क्षेत्र के आदिवासी नागरिकों के लिए रास्ता खुला कराने और पुल निर्माण की मांग को लेकर भी उन्होंने समाचारों, निवेदनों और लगातार पाठपुरावे के माध्यम से प्रयास किए। भिवंडी तालुका एवं ठाणे जिले की विभिन्न समस्याओं को पत्रकारिता के माध्यम से सामने लाकर उनके समाधान के लिए उन्होंने निस्वार्थ भाव से कार्य किया।

उनकी दो दशक लंबी पत्रकारिता एवं सामाजिक सेवा को ध्यान में रखते हुए नालंदा एन.आई.आई.आर.सी. यूनिवर्सिटी इंडिया ने उन्हें मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया। इस सम्मान के बाद विभिन्न सामाजिक एवं पत्रकारिता क्षेत्रों से शरद धुमाल का अभिनंदन एवं कौतुक किया जा रहा है।

कॉइनडीसीएक्स ने पेश की डेली और मंथली एसआईपी सुविधा

मुंबई। भारत के प्रमुख क्रिप्टो एक्सचेंज कॉइनडीसीएक्स ने 'डेली एसआईपी' सुविधा शुरू करने की घोषणा की है। यह उसके मौजूदा लोकप्रिय मंथली एसआईपी अनुभव का ही एक नया विस्तार है, जिसकी मदद से यूजर्स अब सिर्फ 100 रुपये से हर दिन क्रिप्टो में निवेश कर सकते हैं। यह अपडेट निवेशकों को प्रक्रिया को सरल, ऑटोमेटेड और आसान रखते हुए लंबी अवधि के लिए मजबूत पोर्टफोलियो बनाने का एक अधिक नियमित और बेहतर जरिया प्रदान करता है। इसके साथ ही कॉइनडीसीएक्स ने एक्सटेंडेड इंटरनल रेट ऑफ रिटर्न ट्रैकिंग भी शुरू की है। यह उद्योग जगत का एक मानक मीट्रिक है, जो बार-बार किए जाने वाले निवेश से मिलने वाले एनुअलाइज्ड रिटर्न का एकदम सटीक दृश्य प्रदान करता है। इससे यूजर्स को समय के साथ अपने पोर्टफोलियो के प्रदर्शन का बेहतर मूल्यांकन करने में मदद मिलती है। इस नए अपडेट पर बात करते हुए कॉइनडीसीएक्स के एग्जीक्यूटिव वीपी - ग्रोथ एंड क्रिप्टो बिजनेस हेड, मिनाल ठुकराल ने कहा, ₹एसआईपी हमेशा से कॉइनडीसीएक्स पर सबसे लोकप्रिय निवेश प्रोडक्ट्स में से एक रहा है। हमारी कम्युनिटी से हमें सबसे ज्यादा मिलने वाली रिक्वेस्ट में से एक डेली और मंथली निवेश करने की सुविधा थी। एसआईपी 2.0 के साथ, हमने एक ऐसा अनुभव तैयार किया है जो इस बात पर आधारित है कि लोग वास्तव में कैसे निवेश करते हैं, न कि बाजार के उतार-चढ़ाव के आधार पर। चाहे कोई डेली, वीकली या मंथली निवेश करना पसंद करता हो, अब उनके पास एक अनुशासित निवेश आदत बनाने की पूरी फ्लैक्सिबिलिटी है, जो रूटीन के हिसाब से बिल्कुल सही बैठती है।कई निवेशक लंबी अवधि के लिए क्रिप्टो में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन वे अक्सर बाजार की अस्थिरता या 'सही समय' पर प्रवेश करने के दबाव के कारण पीछे हट जाते हैं। एसआईपी 2.0 को इसी झंझट को दूर करने के लिए डिजाइन किया गया है। सिर्फ 100 रुपये से शुरू होने वाले फ्लैक्सिबल निवेश विकल्पों के साथ-साथ, हमने एक्सटेंडेड इंटरनल रेट ऑफ रिटर्न -आधारित परफॉर्मेंस ट्रैकिंग पेश की है, जो यूजर्स को यह स्पष्ट दिखाती है कि उनका रेगुलर इन्वेस्टमेंट समय के साथ कैसा प्रदर्शन कर रहा है।

जय हिंद इंडस्ट्रीज दो साल में करेगी 600 करोड़ रुपये का निवेश

मुंबई। प्रिसिजन एल्युमीनियम डाई-कास्टिंग कंपोनेंट्स की अग्रणी वैश्विक आपूर्तिकर्ता और पूरी तरह वर्टिकली इंटीग्रेटेड कंपनी जय हिंद इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड (जेएचआई) ने अपनी उत्पादन क्षमता और मैन्युफैक्चरिंग सुविधाओं को मजबूत करने के लिए अगले दो वर्षों में 600 करोड़ रुपये के चरणबद्ध निवेश की घोषणा की है। यह निवेश हाई प्रेशर डाई कास्टिंग (एचपीडीसी) और ग्रैविटी डाई कास्टिंग (जीडीसी) कारोबार को बढ़ाने के लिए किया जाएगा। कंपनी ने चेन्नई स्थित अपने प्लांट के विस्तार के लिए पहले ही 200 करोड़ रुपये के निवेश की घोषणा की थी।

अब इसमें 400 करोड़ रुपये और जोड़ने का फैसला किया गया है। इसके साथ कंपनी का कुल प्रस्तावित निवेश बढ़कर 600 करोड़ रुपये हो गया है। यह अतिरिक्त निवेश वित्त वर्ष 2026-27 से 2027-28 के बीच चरणबद्ध तरीके से किया जाएगा। निवेश पुणे के आकुर्डी और उर्से तथा चेन्नई स्थित कंपनी की प्रमुख उत्पादन इकाइयों में किया जाएगा।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालयः
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

जौनपुर पुलिस ने बरामद किए 200 गुम मोबाइल, 45 लाख रुपये कीमत के फोन स्वामियों को लौटाए

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। साइबर क्राइम थाना/सेल और जनपद के विभिन्न थानों की साइबर सेल टीम ने उएक्फ पोर्टल के माध्यम से कार्रवाई करते हुए 200 गुमशुदा मोबाइल फोन बरामद किए हैं। बरामद मोबाइलों की अनुमानित कीमत करीब 45 लाख रुपये बताई गई है। इसके साथ ही जौनपुर पुलिस अब तक कुल 1941 मोबाइल फोन, जिनकी कीमत करीब 3 करोड़ 90 लाख रुपये है, बरामद कर उनके वास्तविक स्वामियों को सौंप चुकी है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह के निर्देश पर अपर पुलिस अधीक्षक नगर आयुष श्रीवास्तव के निर्देशन और सहायक पुलिस अधीक्षक/क्षेत्राधिकारी नगर गोल्डी गुप्ता के पर्यवेक्षण में यह कार्रवाई की गई।

पुलिस टीम ने उएक्फपोर्टल पर दर्ज शिकायतों और गुमशुदगी के प्रार्थना पत्रों के आधार पर अलग-अलग थाना क्षेत्रों से मोबाइल फोन बरामद किए। बरामद मोबाइल उत्तर प्रदेश के आजमगढ़, वाराणसी, सुल्तानपुर, प्रयागराज, लखनऊ, कानपुर, बलिया, प्रतापगढ़ और भदोही सहित अन्य जिलों से मिले। इसके अलावा दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, झारखंड, बिहार और राजस्थान से भी कुछ मोबाइल बरामद किए गए।

बरामद मोबाइलों में वनप्लस, वीवो, रेडमी, ओप्पो, रियलमी, टेक्नो, पोको, नोकिया और सैमसंग समेत विभिन्न कंपनियों के फोन शामिल हैं। एसएसपी द्वारा बरामद मोबाइल उनके स्वामियों को सौंपे गए। मोबाइल वापस मिलने पर स्वामियों ने खुशी जताते हुए जौनपुर पुलिस का आभार व्यक्त किया।

थानावार बरामदगी में साइबर क्राइम थाना से 81, लाइन बाजार से 11, कोतवाली नगर से 10, सरायख्वाजा से 6, केराकत से 4, खेतासराय से 5, खुटहन से 6, मड़ियाहूँ से 12, रामपुर से 15 और सुजानगंज से 10 मोबाइल समेत विभिन्न थानों से कुल 200 मोबाइल फोन बरामद किए गए। एसएसपी ने लोगों से अपील की कि मोबाइल गुम होने पर तत्काल थाने में गुमशुदगी दर्ज कराने के बाद उएक्फ पोर्टल पर शिकायत करें। साइबर अपराध होने पर तुरंत 1930 पर शिकायत करें या cybercrime.gov.in पर शिकायत दर्ज कराएं।

पुलिस ने लोगों को अज्ञात लिंक या क्यूआर कोड पर क्लिक/स्कैन न करने, संदिग्ध कॉल पर दिए गए निदेशों का पालन न करने, अनजान व्यक्ति के कहने पर रिमोट एक्सेस ऐप इंस्टॉल न करने तथा किसी के साथ अपना बैंक, ओटीपी, एम-पिन या यूपीआई पिन साझा न करने की सलाह दी है। पुलिस ने स्पष्ट किया कि साइबर अपराध से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय जागरूकता और सतर्कता है।

दुद्धी में गूंजा 'वंदे मातरम', भव्य तिरंगा पदयात्रा से जागी राष्ट्र चेतना

हजारों छात्र-छात्राओं ने हाथों में तिरंगा लेकर किया नगर भ्रमण, भारत माता की जय के नारों से गूंजा पूरा नगर

दुद्धी,सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। आजादी के दीवानों की याद और राष्ट्रभक्ति की भावना को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से मंगलवार को दुद्धी में भाजपा मंडल दुद्धी के तत्वावधान में भव्य तिरंगा पदयात्रा निकाली गई। रामलीला खेल मैदान से शुरू हुई यात्रा में हजारों छात्र-छात्राओं सहित भाजपा कार्यकर्ताओं और नगरवासियों ने हाथों में तिरंगा लेकर पूरे उत्साह के साथ सहभागिता की।

डीजे पर बज रहे देशभक्ति गीतों के बीच निकली तिरंगा यात्रा नगर के विभिन्न मार्गों से होते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष दीपक शाह के आवास तक पहुंची। इस दौरान पूरा नगर 'वंदे मातरम' और 'भारत माता की जय' के गगनभेदी नारों से गूंज उठा। हाथों में लहराते तिरंगे और देशभक्ति के नारों से माहौल ऐसा बन गया, मानो नगर में स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाया जा रहा हो।

यात्रा का नेतृत्व भाजपा मंडल प्रभारी विशाल पांडेय, अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष श्रवण सिंह गौड़, नगर पंचायत चेयरमैन कमलेश मोहन, जिला उपाध्यक्ष मनोज मिश्रा तथा मंडल अध्यक्ष दीपक शाह ने किया। वक्ताओं ने कहा कि तिरंगा देश की एकता, अखंडता और गौरव का प्रतीक है। 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर राष्ट्रभक्ति की भावना को मजबूत करने के लिए यह आयोजन किया गया।

पदयात्रा में मंडल प्रभारी मनीष जायसवाल, प्रबुद्ध प्रकोष्ठ मंडल संयोजक जितेंद्र कुमार चंद्रवंशी, मंडल महामंत्री प्रेम नारायण सिंह, अंशुमान राय, उपाध्यक्ष पंकज अग्रहरि, अनिल कुमार, कमल कानू, युवा मोर्चा अध्यक्ष अजय चंद्रवंशी, धर्मेंद्र पाल, सभासद सुमित सोनी, विकास जौहरी, धनंजय रावत, निरंजन गुप्ता, धीरज जायसवाल, आमेश अग्रहरि, शाहिद अहमद, प्रतिनिधि आनंद अग्रहरि, मोहित अग्रहरि, हिमांशु चौरसिया, सत्यम कश्यप, प्रवीण जायसवाल, गौरव अग्रहरि, प्रिंस अग्रहरि सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। तिरंगा यात्रा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को लेकर वरिष्ठ उपनिरीक्षक संजय सिंह, उपनिरीक्षक श्यामजी यादव तथा कस्बा प्रभारी मय हमराहियों के साथ तैनात रहे।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत छात्राओं के बीच जागरूकता, सैकड़ों छात्राओं ने ली शपथ

डॉ.एस.के. मिश्र

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। 'हर घर तिरंगा, घर-घर तिरंगा' अभियान के तहत बुधवार को मैदागिन स्थित श्री हरिश्चंद्र बालिका इंटरमीडिएट कॉलेज परिसर में छात्राओं के बीच जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शहीदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के साथ आमजन में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना जागृत करना रहा।

सामाजिक संस्था सुबह-ए-बनारस क्लब के बैनर तले आयोजित कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष एवं समाजसेवी मुकेश जायसवाल, लक्ष्मी नर्सिंग कॉलेज एंड हॉस्पिटल के प्रबंध निदेशक डॉ. अशोक कुमार राय तथा कॉलेज की प्रधानाचार्या डॉ. प्रियंका तिवारी के नेतृत्व में सैकड़ों छात्राओं ने हिस्सा लिया।

इस दौरान छात्राओं को हाथों में तिरंगा देकर 10 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा फहराने और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने की शपथ दिलाई गई। वक्ताओं ने कहा कि अभियान का प्रमुख उद्देश्य प्रत्येक नागरिक के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करना और राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान बढ़ाना है।

वक्ताओं ने कहा कि 'हर घर तिरंगा'अभियान के तहत सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालयों, आवासीय घरों तथा शिक्षण संस्थानों में तिरंगा फहराकर अभियान को सफल बनाने में सभी को बढ़-चढ़कर भागीदारी करनी चाहिए। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं में राष्ट्रप्रेम और उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर मुकेश जायसवाल, डॉ. अशोक कुमार राय, डॉ. प्रियंका तिवारी समेत बड़ी संख्या में छात्राएं मौजूद रहीं।

हर बूथ पर मजबूत संगठन खड़ा करने की कांग्रेस की कवायद शुरू

संगठन सृजन अभियान में कार्यकर्ताओं को मिला चुनावी मिशन का मंत्र, सीपी मित्तल बोले-सक्रिय कार्यकर्ताओं को मिलेगा सम्मान

प्रियेश गुप्ता रुद्रा

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। आगामी चुनाव को लेकर कांग्रेस ने जिले में संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने की कवायद शुरू कर दी है। मंगलवार को नगर के एक होटल में पार्टी के संगठन सृजन अभियान का शुभारंभ हुआ। अभियान के तहत जिले से लेकर बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय और मजबूत बनाने पर जोर दिया गया।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए संगठन सृजन अभियान के राष्ट्रीय प्रभारी सीपी मित्तल ने कहा कि कांग्रेस का लक्ष्य प्रत्येक बूथ पर मजबूत संगठन तैयार करना है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आगामी चुनाव को ध्यान में रखते हुए पूरी निष्ठा और सक्रियता के साथ संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि जिला, शहर और ब्लॉक कमेटियों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले कार्यकर्ताओं को उचित जिम्मेदारी और पूरा सम्मान दिया जाएगा। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संगठन की रीढ़ बताते हुए उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर पार्टी को मजबूत करने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

सीपी मित्तल ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी युवाओं, किसानों, महिलाओं और मजदूरों के अधिकारों को लेकर लगातार संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे समय में जब जनता कांग्रेस की ओर उम्मीद की नजर से देख रही है, पार्टी कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

कार्यक्रम में जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार सिंह और शहर अध्यक्ष आरिफ खान ने अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का स्वागत किया। पूर्व जिलाध्यक्ष फैसल हसन तबरेज और पूर्व शहर अध्यक्ष हुकुम सिंह ने कार्यकर्ताओं का आभार जताया।

इस अवसर पर महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष रेखा सिंह, डॉ. संतोष

गिरी, विनय तिवारी, आरसी पांडेय, अनिल दूबे आजाद, राकेश सिंह डब्बू, देवराज पांडेय, राम सिंह बांकुरे, विजय प्रजापति, शिव मिश्रा, ओबीसी प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष संजय माली, ओमकार यादव, अनिल सोनकर, शैलेन्द्र यादव समेत बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन संगठन प्रभारी राकेश मिश्रा ने किया।

शिवगुलामगंज में दोहरे के खिलाफ खाद्य विभाग का बड़ा वार, 40 किलो दोहरा बरामद

30 किलो सुपारी भी मिली, तीन नमूने जांच को भेजे; युवक पुलिस के हवाले, बरामद सामग्री मौके पर नष्ट

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शिवगुलामगंज खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने मिलावटी और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक खाद्य पदार्थों के खिलाफ अभियान के तहत शिवगुलामगंज मार्केट में बड़ी कार्रवाई की। मंगलवार को टीम ने विकास अग्रहरि पुत्र विनय अग्रहरि के निवास स्थान से करीब 40 किलो दोहरा और 30 किलो सुपारी बरामद की।

कार्रवाई के दौरान विभागीय टीम ने दोहरे के तीन नमूने जांच के लिए लिए। इसके बाद बरामद दोहरा और सुपारी को मौके पर ही नष्ट कराया

गया। मौके पर मौजूद विकास अग्रहरि को पुलिस की सहायता से पकड़कर संबंधित थाने भेजा गया, जहां उसके खिलाफ नियमानुसार अग्रिम कार्रवाई की गई।

मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी मनोज जायसवाल के नेतृत्व में हुई कार्रवाई में खाद्य सुरक्षा अधिकारी मयंक शंकर दुबे, विनोद यादव और अपराजिता तिवारी शामिल रहे।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने स्पष्ट किया कि जनस्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा। अधिकारियों ने कहा कि मिलावटी, प्रतिबंधित अथवा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक खाद्य पदार्थों की बिक्री या निर्माण करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी।

ईसापुर में पंखे की विद्युत तार के करेंट की चपेट में आने से महिला की मौत

तीन मासूम बच्चों के सिर से उठा मां का साया

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शहर कोतवाली क्षेत्र के ईसापुर मोहल्ले में बुधवार को करंट की चपेट में आने से एक महिला की मौत हो गई। हादसे के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। मृतका अपने पीछे तीन छोटे-छोटे बच्चों को छोड़ गई है। जानकारी के अनुसार ईसापुर निवासी प्रिया सोनी (27) पत्नी अजय सोनी घर में पंखे की तार लगाते समय अचानक करंट की चपेट में आ गईं। करंट लगते ही वह गंभीर रूप से झुलस गईं। परिजन आनन-फानन में उन्हें ई-रिक्शा से जिला अस्पताल ले जाने के लिए निकले, लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही उनकी मौत हो चुकी थी। महिला की मौत की खबर मिलते ही परिवार में चीख-पुकार मच गई। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। हादसे के बाद मोहल्ले में भी मातम का माहौल है। मृतका के तीन छोटे बच्चे हैं। इनमें एक छह वर्षीय बेटा आकाश, पांच वर्षीय बेटी प्रिया और करीब तीन वर्ष की एक छोटी बेटी शामिल है। मां की मौत के बाद मासूम बच्चों को देखकर वहां मौजूद लोगों की आंखें नम हो गईं। घटना से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। हादसे की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मामले की जानकारी जुटानी शुरू कर दी है।

कुवैत में हत्या के बाद आजमगढ़ पहुंचा भाजपा नेता के पुत्र का शव, गांव में पसरा मातम

आजमगढ़ (उत्तरशक्ति)। कुवैत में चार दिन पहले हत्या किए गए फूलपुर थाना क्षेत्र के यूसुफपुर खानपुर निवासी 25 वर्षीय राहुल चौहान का

शव मंगलवार शाम पैतृक गांव पहुंचा। शव पहुंचते ही परिवार में कोहराम मच गया। पत्नी साधना समेत परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल रहा। देर शाम दुवार्सा धाम पर परिजनों और ग्रामीणों की मौजूदगी में राहुल का अंतिम संस्कार कर दिया गया। राहुल भाजपा सदस्य कस्तूरी चौहान के पुत्र थे और रोजगार के सिलसिले में कुवैत में नौकरी करते थे। बताया गया कि करीब छह माह पहले वह दोबारा कुवैत गए थे। इससे पहले भी वह वहां काम कर चुके थे। मृतक के पिता के अनुसार, राहुल दीदारगंज निवासी मुन्ना चौहान के पुत्र के साथ कुवैत गए थे। परिजनों के मुताबिक, कुवैत पुलिस ने हत्या के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है और घटना के कारणों की जांच की जा रही है। परिजनों ने कमरे बदलने अथवा काम से जुड़ी किसी गलतफहमी को संभावित कारण बताया है, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी। मंगलवार शाम राहुल का शव गांव पहुंचते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण और रिश्तेदार उनके घर पहुंच गए। शव देखते ही पत्नी साधना बेसुध हो गईं। करीब चार वर्ष पहले राहुल की शादी हुई थी। उनके पीछे पत्नी के अलावा एक पुत्र और एक पुत्री हैं। युवक की कम उम्र में हुई मौत से पूरे गांव में शोक का माहौल है। भाजपा के वरिष्ठ नेता कृष्ण मुरारी विश्वकर्मा समेत कई लोगों ने राहुल के घर पहुंचकर शोकाकुल परिवार को सांत्वना दी।

मानवता की मिशाल: समाजसेवी अतुल तिवारी ने एक्सीडेंट में घायल मरीज के लिए वाराणसी पहुँचकर किया रक्तदान

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। लगभग एक सप्ताह पूर्व दिनांक 5 अगस्त बुधवार के दिन जनपद जौनपुर के मुफ्तीगंज क्षेत्र में एक भीषण सड़क दुर्घटना हुई थी। इस हादसे में ग्राम सरकोनी, थाना जलालपुर निवासी श्री ईश्वर प्रसाद मौर्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे। अत्यधिक सीरियस चोट के कारण उन्हें जौनपुर जिला अस्पताल से वाराणसी ट्रामा सेंटर रेफर किया गया था और वर्तमान में उनका इलाज वाराणसी के एक निजी अस्पताल में चल रहा है।

इस दुखद सूचना पर जनपद जौनपुर के जफराबाद विधानसभा क्षेत्र के निवासी, अखिल भारतीय हिंदू सेवा दल, उत्तर प्रदेश के प्रदेश संगठन मंत्री, समाजसेवी अतुल कुमार तिवारी (बुद्धिमान) सूचना मिलते ही श्री तिवारी वाराणसी पहुंचे और वहां के स्थानीय ब्लड बैंक में जाकर घायल श्री मौर्य के लिए स्वेच्छा से रक्तदान किया। श्री तिवारी ने इस अवसर पर कहा कि मरीज को आगे भी यदि रक्त की आवश्यकता होगी तो वे स्वयं पुनः रक्तदान करेंगे तथा अपने साथियों से भी रक्तदान करवाकर हर संभव मदद उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने मरीज के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए उनके परिजनों को हर संभव सहयोग का आश्वासन भी दिया। रक्तदान के पश्चात समाजसेवी अतुल तिवारी ने कहा कि ₹अपने लिए तो सभी जीते हैं, जो दूसरों के काम आए वही वास्तविक जीवन है। जरूरतमंदों की मदद करके मुझे आत्मिक संतुष्टि मिलती है। समाज सेवा की यह प्रेरणा मुझे अपने माता-पिता और परिवार से प्राप्त हुई है ₹ यह उनका पहला रक्तदान नहीं है, वे पूर्व में भी कई बार रक्तदान कर चुके हैं।

600 कांवरियों का जत्था बाबा बैद्यनाथ धाम के लिए रवाना

डीजे की धुन पर झूमे श्रद्धालु, हर-हर महादेव के जयघोष से भक्तिमय हुआ विंढमगंज

विंढमगंज,सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। सावन माह में बाबा भोलेनाथ की भक्ति से सराबोर करीब 600 कांवरियों का जत्था सुल्तानगंज से

गंगाजल लेकर बाबा बैद्यनाथ धाम, देवघर के लिए रवाना हुआ। कांवरिए छह बसों और करीब 20 छोटी गाड़ियों में सवार होकर अपने-अपने गांव के देवी-देवताओं एवं आराध्य देव की पूजा-अर्चना करते हुए विंढमगंज पहुंचे।

कांवरियों ने मां काली मंदिर, बाबा डीहवार राम-जानकी मंदिर, सूर्य देव मंदिर, महावीर मंदिर एवं शिव मंदिर में दर्शन-पूजन कर आशीर्वाद लिया। इस दौरान राम-जानकी मंदिर के महंत मनमोहन दास, हृदयानंद, नंदलाल तिवारी, महावीर मंदिर के पुजारी आनंद दुबे तथा मां काली मंदिर के पुजारी मनोज तिवारी सहित अन्य लोगों ने कांवरियों को आशीर्वाद दिया। इसके बाद जत्था देवघर के लिए रवाना हुआ।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गोपाल मिष्ठान भंडार, रघुवर केसरी, प्रदीप होटल एवं सियाराम होटल की ओर से कांवरियों के लिए सेवा शिविर लगाया गया। श्रद्धालुओं के लिए खीर, पेड़ा, केला, हलवा, विभिन्न प्रकार के फलाहार, प्रसाद एवं जलपान की व्यवस्था की गई। कांवरियों ने सेवा कार्य की सराहना करते हुए आयोजकों का आभार जताया।

जत्थे में राजीव रंजन तिवारी, प्रभात कुमार, वीरेंद्र कुमार, सुमन गुप्ता, पवन कुमार रजक, निरंजन सोनी, यदुनाथ यादव पूर्व प्रधान, मदन वर्मा, संजय यादव, संजय गुप्ता, अमित केसरी, जितेंद्र गुप्ता, गगन गुप्ता, श्याम सुंदर, रवि गुप्ता, राजकुमार, सुरेंद्र गुप्ता सहित बड़ी संख्या में कांवरिया शामिल रहे।

डीजे पर बज रहे भक्ति गीतों की धुन पर कांवरिए नाचते-गाते और बाबा भोलेनाथ के जयकारे लगाते हुए रवाना हुए। 'हर-हर महादेव', 'जय शिव शंभू' और 'जय बाबा बैद्यनाथ' के जयघोष से पूरा विंढमगंज नगर भक्तिमय हो उठा।

नशामुक्त युवा ही विकसित भारत की मजबूत नींव: शिवेंद्र प्रताप

नशे को नहीं-नए सपनों को चुनें, निष्क्रियता को नहीं-नए भारत को चुने

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। 12 अगस्त 2026 को क्षेत्रीय निदेशालय, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार, उत्तर प्रदेश के निदेर्शानुसार वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) एवं विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे नशा मुक्त परिसर एवं सामाजबके संयुक्त तत्वावधान में विकसित भारत युवा कनेक्ट (VBYCP-2026) के अंतर्गत 'नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. वंदना सिंह के संरक्षकत्व में रज्जू भैया संस्थान स्थित आर्यभट्ट सभागार में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि यूथ आइकॉन शिवेंद्र प्रताप सिंह तथा नशा मुक्त वॉरियर त्रिलोकीनाथ गुप्ता रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक वंदे मातरम के गायन, मां सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। डॉ. शशिकांत यादव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा एवं उद्देश्य प्रस्तुत किया। युवा अधिकारी श्री तन्मय मोहन ने स्वयंसेवकों को माई भारत के संबंध में जानकारी दी। इसके पश्चात माई भारत गीत एवं विकसित भारत यंग लीडर डायलॉग पर आधारित चलचित्र प्रदर्शित किया गया।

मुख्य अतिथि शिवेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि 'भारत की युवा शक्ति ही विकसित भारत की सबसे बड़ी ताकत है। नशा मुक्त युवा ही विकसित भारत की मजबूत नींव तैयार कर सकते हैं।' उन्होंने कहा कि नशे की लत युवाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, मानसिक क्षमता, परिवार एवं सामाजिक जीवन पर गंभीर प्रभाव डालती है। युवाओं को नशे से दूर रहने, साथियों के दबाव का विरोध करने तथा नशे की समस्या से जूझ रहे लोगों को अपमानित करने के बजाय उपचार एवं परामर्श के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि 'नशे को नहीं-नए सपनों को चुनें,

निष्क्रियता को नहीं-नए भारत को चुनें।' उन्होंने युवाओं से खेल, योग, कौशल विकास एवं सकारात्मक गतिविधियों को जीवन का हिस्सा बनाने की अपील की। कार्यक्रम में विकसित भारत @2047 के विजन पर भी चर्चा हुई। आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया, आधारभूत संरचना, सतत विकास, महिला नेतृत्व वाला विकास, विनिर्माण एवं टरटए, अंतरिक्ष एवं नवाचार, रक्षा आत्मनिर्भरता तथा भारत की वैश्विक भूमिका जैसे विषयों पर युवाओं की भूमिका को रेखांकित किया गया।

पीयू में नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत कार्यक्रम का आयोजन

इस अवसर पर श्री त्रिलोकीनाथ गुप्ता, नशा मुक्त वारियर ने युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करते हुए स्वस्थ, सकारात्मक एवं रचनात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर युवाओं एवं उपस्थित शिक्षकों को ऑफलाइन एवं ऑनलाइन नशा मुक्ति की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे हर घर तिरंगा अभियान- 2026 के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान के समन्वयक डॉ मनोज कुमार पाण्डेय एवं मुख्य अतिथि के नेतृत्व में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन एनसीसी एवं एनएसएस के छात्रों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन यूथ वालंटियर अभिनव कीर्ति पांडेय, समन्वय डॉ. शशिकांत यादव एवं धन्यवाद ज्ञापन नशा मुक्त परिसर एवं समाज के समन्वयक डॉ मनोज कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. प्रदीप कुमार, प्रो. देवराज सिंह, प्रो. विनोद कुमार, डॉ. प्रदीप कुमार यादव, सुमित सिंह, अर्पिता यादव, सिद्धार्थ सिंह, शिवम गुप्ता, उदय प्रताप सिंह, हर्ष चतुर्वेदी, यश एवं सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे। प्रतिभागियों को नशामुक्त भारत प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए।

महापौर व नगर आयुक्त से कुआं (जल कूप) बचाने की अपील

लंका रामलीला मैदान के पास सड़क चौड़ीकरण अभियान में निकला है प्राचीन कुआं

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। कुंडो तालाबों व कुओ (जल कूप) की नगरी काशी जिसे कभी आनंद कानन वन के नाम से भी जाना जाता था। काशी नगरी में कभी कुओ तालाबों की भरमार थी। आज उसी काशी नगरी में कुओ की स्थिति दयनीय होती जा रही है।

महापौर एवं नगर आयुक्त के पहल से कुओ को संरक्षित करने का अभियान चलाया जा रहा है जो काफी सराहनीय है। वही दूसरी तरफ वीएचयूँ लंका गेट रविंद्रपुरी कॉलोनी होते हुए कीनाराम स्थली तक हो रहे सड़क चौड़ीकरण योजना में लंका रामलीला मैदान के पास एक प्राचीन प्राचीन कुआं निकाला है। यह कुआं बहुत ही प्राचीन काल का है। इस कुएं का संबंध गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा स्थापित रामलीला से भी है। गोस्वामी जी द्वारा स्थापित रामलीला के तहत लंका पर भगवान राम- रावण के

युद्ध की लीला का मंचन होता है और रामलीला में बनने वाले स्वरूप यहीं पर विश्राम करते हैं और इसी कुएं का पानी भी पीते हैं। इस कुएं का पानी बहुत ही शीतल एवं निर्मल है। नगर के कुंडो और तालाबों को बचाने के लिए संघर्षरत समाजसेवी रामयश मिश्र ने महापौर व नगर आयुक्त से अपील करते हुए कहा कि जिस तरह से वह नगर के कुवों को संरक्षित कर रहे है उसी तरह २६ इस कुएं को भी संरक्षित करें।

वाराणसी में डॉ. लंकेश बापू की श्री शिव कथा का भव्य आयोजन

वाराणसी। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर स्थित मल्टी पर्पज हॉल में 5 सितंबर से 11 सितंबर तक देश के प्रख्यात कथावाचक डॉ. लंकेश बापू की श्री शिव कथा का भव्य आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के आयोजक प्रदीप कुमार प्रहलाद भाई पटेल ने उपरोक्त जानकारी देते हुए बताया कि स्वर्गीय प्रहलाद भाई माधवदास पटेल की पुण्य स्मृति में आयोजित इस कथा को सुनने के लिए गुजरात से बड़ी संख्या में शिव भक्त गांधीनगर से 3 सितंबर को रात 11 बजे गांधीनगर कैपिटल, बनारस एक्सप्रेस ट्रेन से रवाना होंगे। 11 सितंबर को कथा के उपरांत बस द्वारा शिव भक्त अयोध्या के लिए प्रस्थान करेंगे। श्री शिव कथा में उत्तर प्रदेश के अलावा महाराष्ट्र, गुजरात, नई दिल्ली तथा अन्य प्रदेशों से भी भारी संख्या में विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहेंगे।

बिना पूर्व सूचना मंदिर, चबूतरा और अनाथ भाइयों का घर गिराने का आरोप, सीओ से कार्रवाई की मांग

जितेन्द्र कन्नौजिया

चंदवक ,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। चंदवक थाना क्षेत्र के सतमेसरा गांव के करीब एक दर्जन ग्रामीणों ने बुधवार को क्षेत्राधिकारी कार्यालय केराकत पहुंचकर प्रार्थना पत्र सौंपा। ग्रामीणों ने थानाध्यक्ष, राजस्व निरीक्षक और लेखपाल पर मिलीभगत का आरोप लगाते हुए बिना पूर्व सूचना और आदेश के मंदिर, चबूतरा तथा अनाथ भाइयों के घर को बुलडोजर से गिराए जाने की शिकायत की। ग्रामीणों ने मामले की निष्पक्ष जांच कर संबंधित लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। ग्रामीणों के मुताबिक गांव में आराजी नंबर 258/2 का करीब छह एकड़ रकबा है, जिसमें लगभग दो एकड़ सरकारी और चार एकड़ भूमिधरी भूमि बताई जा रही है।

इसी भूमि पर लंबे समय से ग्रामीणों द्वारा मंदिर और चबूतरा बनाकर पूजा-पाठ किया जाता रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि मंदिर के पास पूर्व ग्राम प्रधान ने दो अनाथ भाइयों के रहने के लिए एक कमरा बनवाया था, जिसमें दोनों भाई रहते थे।

आरोप है कि 17 जुलाई 2026 को शाम करीब 4:30 बजे राजस्व निरीक्षक, लेखपाल और चंदवक थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंची और बिना पूर्व सूचना मंदिर, चबूतरा तथा अनाथ भाइयों के कमरे को बुलडोजर से गिरा दिया। ग्रामीणों का आरोप है कि कार्रवाई के संबंध में जानकारी लेने पर उन्हें न्यायालय जाकर जानकारी लेने की बात कही गई।

साथ ही थानाध्यक्ष पर ग्रामीणों को बंद करने की धमकी देने का भी आरोप लगाया गया है। ग्रामीणों का कहना है कि मंदिर गांव के लोगों की आस्था का केंद्र है। ऐसे में बिना पूर्व सूचना अथवा आदेश के मंदिर और घर गिराया जाना उचित नहीं है। घटना के बाद ग्रामीणों ने पहले भी प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की थी, लेकिन संतोषजनक कार्रवाई नहीं होने पर बुधवार को दोबारा सीओ कार्यालय पहुंचकर शिकायत की गई। ग्रामीणों ने क्षेत्राधिकारी से पूरे मामले की निष्पक्ष जांच, राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों-कर्मचारियों की भूमिका की जांच तथा दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ उचित कार्रवाई की मांग की है। हालांकि, ग्रामीणों द्वारा लगाए गए आरोपों पर संबंधित अधिकारियों का पक्ष सामने नहीं आया है।

बाटा इंडिया ने वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही के नतीजे घोषित किए

मुंबई/गुरुग्राम। भारत के सबसे भरोसेमंद फुटवियर ब्रांडों में से एक बाटा इंडिया ने 30 जून 2026 को समाप्त तिमाही के वित्तीय नतीजे आज जारी किए। कंपनी ने इस तिमाही में 978.9 करोड़ रुपये का राजस्व दर्ज किया, जो पिछले साल की इसी तिमाही की तुलना में करीब 4% अधिक है। इस तिमाही में कंपनी का टैक्स के बाद लाभ 63.7 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले साल इसी तिमाही में यह 51.7 करोड़ रुपये था। यानी कंपनी के मुनाफे में 23% से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है।

इस तिमाही में एकमुश्त खर्चों को छोड़कर कंपनी का टैक्स से पहले का मुनाफा 90.6 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले साल की इसी तिमाही में यह 74.5 करोड़ रुपये था। यानी PBT में 22% से ज्यादा की वृद्धि दर्ज की गई। तिमाही के दौरान कंपनी को कुछ एकमुश्त खर्च भी करने पड़े। इनमें लाइसेंस फीस से जुड़े मुद्रा मूल्य में गिरावट के कारण 2.7 करोड़ रुपये का गैर-नकद विदेशी मुद्रा नुकसान और एफ्ह सिस्टम लागू करने पर 2.4 करोड़ रुपये का एक बार का खर्च शामिल है।

कामकाज को बेहतर बनाने, खर्चों पर नियंत्रण रखने और अलग-अलग बिक्री माध्यमों में बेहतर तरीके से काम करने के कारण कंपनी ने इस तिमाही में लगभग 216.6 करोड़ रुपये का ऑपरेटिंग कैश प्रॉफिट दर्ज किया। इसमें पिछले साल की तुलना में 7.6% की बढ़ोतरी हुई है। बाटा इंडिया के निदेशक मंडल ने 25 रुपये प्रति शेयर के अंतरिम लाभांश की घोषणा की है। इसके तहत कंपनी कुल 321.3 करोड़ रुपये का लाभांश वितरित करेगी। नतीजों पर टिप्पणी करते हुए बाटा इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ गुंजन शाह ने कहा, कंपनी ने लगातार तीसरी तिमाही में विकास की रफ्तार बनाए रखी है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही (Q1 FY27) में कंपनी के कारोबार में 4% की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि प्रीमियम उत्पादों की बढ़ती मांग और बिक्री की मात्रा में बढ़ोतरी के कारण हुई है। विज्ञापन पर हमारा निवेश करीब 25% बढ़ा है, जिससे ग्राहकों के साथ बेहतर जुड़ाव बनाने में मदद मिली। वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण परिवहन लागत, शिपिंग और सामान पहुंचाने के समय पर असर पड़ा, लेकिन हमने इस स्थिति को सफलतापूर्वक संभाला।

7000 एमएएच बैटरी और 50 मेगापिक्सल एआई कैमरे के साथ रियलमी 16एक्स 5जी पेश

पटना(उत्तरशक्ति)। रियलमी ने अपनी नंबर सीरीज में रियलमी 16एक्स 5जी पेश किया। इसमें 7000 एमएएच की शक्तिशाली बैटरी, 45 वॉट सुपरवूक फास्ट चार्जिंग, 144 हर्ट्ज का अल्ट्रा-ब्राइट डिस्प्ले और 50 मेगापिक्सल का एआई कैमरा दिया गया है। रियलमी 16एक्स 5जी में मीडियाटेक डायमेंसिटी 6300 5जी चिपसेट, 18 जीबी तक डायनामिक रैम और 256 जीबी तक स्टोरेज है।

यह एंड्रॉयड 16 पर आधारित रियलमी यूआई 7.0 पर चलता है और 5 साल की स्मूथ परफॉर्मेंस के साथ आता है। गेमिंग के लिए इसमें जीटी बूस्ट और हाइपर कूलिंग टेक्नोलॉजी के साथ 5300 मिमीध का एयरफ्लो वेपर चैंबर कूलिंग सिस्टम दिया गया है। एंटरटेनमेंट और गेमिंग के लिए इसमें 6.8 इंच का अल्ट्रा-ब्राइट डिस्प्ले है, जिसमें 144 हर्ट्ज का रिफ्रेश रेट और 1200 निट्स तक हाई ब्राइटनेस मोड है। रियलमी 16एक्स 5जी में मिलिटरी-ग्रेड शॉक रजिस्टैंस, आईपी65 डस्ट एंड वॉटर रजिस्टैंस और रेन टच मोड दिया गया है। यह ग्लोरी व्हाइट और एंड्योरेंस ब्राउन कलर्स में उपलब्ध है। 4जीबी प्लस 128जीबी वेरिएंट 23,999 रुपये, 6जीबी प्लस 128जीबी 25,999 रुपये और 6जीबी प्लस 256जीबी 28,999 रुपये के ऑफर मूल्य में उपलब्ध हैं। इसकी सेल 13 अगस्त 2026 को दोपहर 12 बजे से फ्लिपकार्ट, रियलमीकॉम और मेनलाइन स्टोर्स पर शुरू।

मर्सिडीज-बेंज ने लॉन्च किया एआई-संचालित ऑटोमेटेड व्हीकल स्कैनर

मुंबई। लग्जरी कार निमार्ता मर्सिडीज-बेंज ने जोगेश्वरी (पश्चिम) स्थित लैंडमार्क कार्स में देश का पहला एआई-संचालित ऑटोमेटेड व्हीकल स्कैनर पेश किया है। यह अत्याधुनिक स्कैनर कार के चलते ही उसका 360 डिग्री डिजिटल रिकॉर्ड तैयार करता है, जिससे वाहन की जांच में लगने वाला समय कम होता है और ग्राहकों को तेज एवं सुविधाजनक सर्विस अनुभव मिलता है। मर्सिडीज-बेंज व्हीकल स्कैनर देश का पहला एआई आधारित ऑटोमेटेड स्कैनर है। यह तकनीक कार की डिजिटल जांच कर वाहन की स्थिति का आकलन करने में मदद करती है। जर्मनी, इटली, कोरिया, नीदरलैंड, स्विट्जरलैंड और तुर्की जैसे अंतरराष्ट्रीय बाजारों में यह तकनीक पहले से कार्यरत है। सर्विस काउंटर पर डिजिटल जांच की सुविधा मिलने से ग्राहकों को अधिक पारदर्शी और बेहतर व्यक्तिगत सर्विस अनुभव मिलने की उम्मीद है। मर्सिडीज-बेंज इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर एवं सीईओ संतोष अय्यर ने कहा कि कंपनी पुराने तौर-तरीकों में बदलाव करते हुए ग्राहकों की सुविधा के लिए लगातार एआई और आधुनिक तकनीक को अपना रही है। इसका उद्देश्य बिक्री-पश्चात सेवाओं में भी मर्सिडीज-बेंज की गुणवत्ता को बनाए रखना है। उन्होंने कहा कि कंपनी ग्राहकों के लिए वाहन के रखरखाव की कुल लागत कम करने की दिशा में भी काम कर रही है, ताकि सर्विसिंग अधिक तेज और बेहतर हो तथा ग्राहकों को हर स्तर पर बेहतर वैल्यू मिल सके।

लैंडमार्क कार्स के चेयरमैन एवं एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर संजय ठक्कर ने कहा कि मुंबई में ग्राहकों के लिए आधुनिक सर्विस सेंटर और नया व्हीकल स्कैनर पेश करके कंपनी बेहद उत्साहित है। उन्होंने कहा कि स्कैनर तेजी से काम करता है और इससे ग्राहकों को अपनी कार की देखभाल में काफी सुविधा मिलेगी। लैंडमार्क कार्स ग्राहकों को बिक्री और सर्विस का विश्वस्तरीय अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। ठक्कर ने कहा कि मर्सिडीज-बेंज जैसे वैश्विक ब्रांड का भरोसेमंद और लंबे समय से भागीदार होना कंपनी के लिए गर्व की बात है। उन्होंने बताया कि लैंडमार्क कार्स मर्सिडीज-बेंज के साथ मिलकर गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में अपने नेटवर्क का लगातार विस्तार कर रहा है। मर्सिडीज-बेंज ने मुंबई में अपने नेटवर्क का विस्तार करते हुए लैंडमार्क कार्स मुंबई का उद्घाटन भी किया। यह मुंबई में कंपनी का 14वां लग्जरी सेंटर है और इसे शहर की सबसे बड़ी लग्जरी सर्विस फैसिलिटी बताया गया है। नए सेंटर में ग्राहकों को बिक्री और सर्विस से जुड़ी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

इंदौर के केशर बाग स्थित बगीचे में जैन संत का अंतिम संस्कार, रात में पुलिस ने नहीं दी थी अनुमति

-प्रणित नरेंद्र तिवारी

इंदौर (उत्तरशक्ति)। इंदौर के अन्नपूर्णा थाना क्षेत्र में केसर बाग रोड स्थित आचार्य विद्यासागर बगीचे में बुधवार सुबह जैन संत के अंतिम संस्कार की सूचना से हड़कंप मच गया।

जानकारी के मुताबिक, बगीचे में 80 वर्षीय जैन संत का अंतिम संस्कार किया गया। सार्वजनिक बगीचे में दाह संस्कार की जानकारी मिलते ही स्थानीय रहवासी मौके पर पहुंचे और विरोध जताया। सूचना मिलने पर पुलिस टीम भी मौके पर पहुंची और स्थिति को संभाला। फिलहाल पुलिस और नगर निगम की ओर से मामले की जांच की जा रही है।मामले को लेकर रहवासियों की ओर से नगर निगम के उद्यान अधिकारी को लिखित शिकायत भी दी गई है। शिकायत में बताया गया है कि जोन क्रमांक 15, वार्ड क्रमांक 72 के अंतर्गत आने वाले नगर निगम के विकसित आचार्य श्री विद्या सागर उद्यान में नेमी नगर जैन कॉलोनी में इन्द्रपुरी चातुर्मास के जैन समाज के लोगों द्वारा कार्यक्रम चल रहा था। इसी दौरान श्री सुलभथी सागर जी महाराज का अचानक स्वर्गवास हो गया। शिकायत के अनुसार, दिगम्बर जैन समाज के ट्रस्ट द्वारा नगर निगम के उद्यान परिसर में ही उनका अंतिम संस्कार किया गया। रहवासियों को इसकी जानकारी सुबह करीब 7 बजे मिली, जिसके बाद स्थल का निरीक्षण किया गया। शिकायत में दावा किया गया है कि सुबह करीब 6 बजे नगर निगम के गार्डन में बिना पूर्व सूचना के अंतिम संस्कार कर दिया गया। रहवासियों ने नगर निगम से मामले की जानकारी लेकर नियमानुसार उचित कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

हजारों विद्यार्थियों ने निकाली ऐतिहासिक तिरंगा यात्रा

केराकत, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। स्वतंत्रता दिवस की तैयारियों के बीच बुधवार को केराकत नगर राष्ट्रभक्ति के रंग में सराबोर हो उठा। पब्लिक इण्टर कॉलेज मैदान से 100 मीटर लंबे विशाल तिरंगे के साथ ऐतिहासिक तिरंगा यात्रा निकाली गई। हाथों में लहराता तिरंगा, भारत माता के जयघोष और वंदे मातरम् के नारों से पूरा केराकत नगर गूंज उठा। यात्रा में हजारों की संख्या में छात्र-छात्राओं एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता व केराकत के पूर्व विधायक दिनेश चौधरी और भाजपा कार्यकर्ताओं ने सहभागिता कर देश की एकता, अखंडता और राष्ट्रप्रेम का संदेश दिया। विशाल तिरंगा यात्रा का शुभारंभ भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं केराकत के पूर्व विधायक दिनेश चौधरी ने झंडी दिखाकर किया।

केराकत पब्लिक इण्टर कॉलेज मैदान से शुरू हुई यात्रा कालीजी मन्दिर से नया चौराहा होते हुए पुनः पब्लिक इण्टर कॉलेज मैदान पहुंचकर संपन्न हुई।

विशाल तिरंगे को थामे विद्यार्थियों का जोश और देशभक्ति का उत्साह देखते ही बन रहा था।

इस अवसर पर पूर्व विधायक दिनेश चौधरी नें कहा कि तिरंगा देश की आन, बान और शान का प्रतिक है! ऐसे आयोजनों से युवाओं में राष्ट्रभक्ति की भावना मजबूत होती है।

तिरंगा यात्रा में भाजपा नेता राजबहादुर सिंह बबलू, गौतम मिश्रा गोलू जिला मन्त्री युवा मोर्चा, सुशील कुमार पटवा प्रबंधक श्री रामलीला नाटक समिति केराकत, प्रीयान्शू सिंह, हिमांशु सिंह, प्रमोद पटवा, अनमोल पटवा, आकाश यादव, रमजान खाँन, रिजवान खाँन सहित अधिकारीगण सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

किताबों से आगे ज्ञान की दुनिया खोलता है पुस्तकालय : प्रो . राज कुमार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय के विवेकानंद केंद्रीय पुस्तकालय में बुधवार को राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मानद पुस्तकालयाध्यक्ष प्रो. राज कुमार ने की तथा संचालन पुस्तकालय प्रभारी डॉ. इंद्रेश कुमार ने किया।

प्रो. राज कुमार ने कहा कि पुस्तकालय में संसाधन कितने भी समृद्ध क्यों न हों, उनका अधिकतम उपयोग एक कुशल और समर्पित पुस्तकालयाध्यक्ष एवं कर्मचारियों पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि 12 अगस्त को डॉ. एस. आर. रंगनाथन की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस मनाया जाता है। रंगनाथन को भारत में पुस्तकालय विज्ञान का जनक माना जाता है। उनके पांच सिद्धांत आज भी पुस्तकालय व्यवस्था के लिए मार्गदर्शक हैं। उन्होंने नवप्रवेशी प्रशिक्षुओं का आह्वान किया कि वे भविष्य के पुस्तकालयाध्यक्ष हैं और पूरी निष्ठा के साथ पुस्तकालय के कार्यों को सीखें। पुस्तकालय प्रभारी डॉ. इंद्रेश कुमार ने डॉ. रंगनाथन के जीवन एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डॉ. मनीष कुमार गुप्ता ने कहा कि रंगनाथन के आदर्शों को अपनाकर प्रशिक्षु पुस्तकालय में बेहतर अध्ययन वातावरण बनाने में योगदान दे सकते हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रशांत कुमार यादव ने कहा कि रंगनाथन के पांच नियमों में ह्रूपाठक का समय बचाओह्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पुस्तकें व्यवस्थित रहें और प्रशिक्षुओं को उनके स्थान की सही जानकारी हो, ताकि पाठकों को अधिकतम लाभ मिल सके। डॉ. रंगनाथन की प्रमुख कृतियों में फाइव लॉज ऑफ लाइब्रेरी साइंस, कोलन क्लासिफिकेशन तथा प्रोलिगोमेना टू लाइब्रेरी क्लासिफिकेशन शामिल हैं। कार्यक्रम का आयोजन पुस्तकालय प्रशिक्षुओं द्वारा किया गया। इस अवसर पर विकास कुमार राव, आकाश यादव, चंद्रभूषण प्रजापति, विजय बहादुर, प्रज्ञा मिश्रा, खुशबू यादव, दीपशिखा रानी एवं रोली शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

इंडेल मनी लिमिटेड ने 500 करोड़ रुपये तक जुटाने के लिए की नॉन-कनवर्टिबल डिबेंचर के पब्लिक इश्यू की घोषणा

मुंबई। मिडिल लेयर की नॉन-डिपॉजिट टेकिंग नॉन-बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनी (NBFC-ML) इंडेल मनी लिमिटेड ने 1,000 रुपये अंकित मूल्य वाले सिक्योर्ड, रेटेड, लिस्टेड और रिडीमेबल नॉन-कनवर्टिबल डिबेंचर (ठउऊ) के पब्लिक इश्यू की घोषणा की है. यह इश्यू मंगलवार, 18 अगस्त 2026 को खुलेगा और सोमवार, 31 अगस्त 2026 को बंद होगा. इसे समय से पहले बंद करने का विकल्प भी होगा, जो जरूरी मंजूरियों पर निर्भर करेगा. निवेशक एनसीडी के लिए एक या एक से अधिक आवेदन कर सकते हैं. सभी श्रेणियों को मिलाकर न्यूनतम आवेदन राशि 10,000 रुपये है और उसके बाद 1,000 रुपये के मल्टीपल में आवेदन किया जा सकता है.

इस पब्लिक इश्यू में 25,000 लाख रुपये (250 करोड़ रुपये) का बेस इश्यू शामिल है. इसमें 25,000 लाख रुपये (250 करोड़ रुपये) तक के ओवरसब्सक्रिप्शन का विकल्प (ग्रीन शू विकल्प) है. इस तरह इश्यू का ओवरऑल साइज 50,000 लाख रुपये (500 करोड़ रुपये) तक हो सकता है. इस इश्यू के मर्चेंट बैंकर ट्रस्ट इन्वेस्टमेंट एडवाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड, नुवामा वेल्थ मैनेजमेंट लिमिटेड और आईडीबीआई कैपिटल मार्केट्स एंड सिक्योरिटीज लिमिटेड हैं.

इस इश्यू से प्राप्त रकम का इस्तेमाल आगे कर्ज देने और मौजूदा उधारी (डेट) को फाइनेंस या रिफाइनेंस करने अथवा डेट सर्विसिंग में किया जाएगा. इसमें कंपनी की मौजूदा उधारी पर ब्याज का भुगतान और/या ब्याज तथा मूलधन का पुनर्भुगतान अथवा समय से पहले भुगतान शामिल है. यदि कोई प्रीपेमेंट पेनल्टी हुई तो कंपनी इस इश्यू से प्राप्त राशि का इस्तेमाल उसके भुगतान के लिए नहीं करेगी. शुद्ध प्राप्तियों का इस्तेमाल पहले इश्यू के घोषित उद्देश्यों के लिए किया जाएगा. इसके बाद बची राशि का उपयोग सामान्य कारोबारी उद्देश्यों के लिए प्रस्तावित है, बशर्ते इसका उपयोग इश्यू के कुल आकार के 25 फीसदी से अधिक न हो और यह सेबी के एनसीएस नियमों के अनुरूप हो. इंडेल मनी के पूर्णकालिक निदेशक उमेश मोहनन ने कहा, हमें अपने पिछले एनसीडी इश्यूज के दौरान बाजार से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली और हमें इस इश्यू के लिए भी ऐसी ही प्रतिक्रिया की उम्मीद है. निवेशकों के लगातार भरोसे से पता चलता है कि हमारे कारोबारी मॉडल, प्रबंधन टीम, कॉरपोरेट संचालन की व्यवस्थाओं और दीर्घकालिक विकास की रणनीति पर वे यकीन करते हैं. भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार मजबूती दिखा रही है और क्रेडिट की डिमांड भी स्वस्थ बनी हुई है. ऐसे में व्यक्तियों और व्यवसायों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने में गोल्ड लोन देने वाली एनबीएफसी सहित संगठित ऋणदाता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. यह धन जुटाने की प्रक्रिया हमारी पूंजी की स्थिति को और मजबूत करेगी. यह क्रेडिट की बदलती डिमांड को पूरा करने, अपने दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाने तथा नियामकीय आवश्यकताओं का पालन करने की हमारी क्षमता को मजबूत करेगी. 30 जून 2026 तक कंपनी की मौजूदगी हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मध्य प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात जैसे राज्यों तथा पुडुचेरी, दिल्ली, चंडीगढ़ और अंडमान एवं निकोबार जैसे केंद्र शासित प्रदेशों में फैली हुई थी।

पेट्रोल पंप पर सोलर प्लांट लगाने का झांसा देकर 50 लाख की साइबर ठगी, आरोपी गिरफ्तार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। पेट्रोल पंप मालिकों और प्रतिष्ठान संचालकों को सस्ते दाम पर सोलर प्लांट लगवाने का झांसा देकर साइबर ठगी करने वाले आरोपी को जौनपुर साइबर क्राइम पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से चार सिम कार्ड और दो एंड्रॉयड मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। पुलिस के मुताबिक आरोपी अब तक करीब 50 लाख रुपये से अधिक की साइबर ठगी कर चुका है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह के निर्देशन में साइबर अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत साइबर क्राइम थाना पुलिस ने तकनीकी जांच, साइबर क्राइम पोर्टल और इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस के जरिए आरोपी की पहचान कर उसे गिरफ्तार किया।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान सचिन शर्मा पुत्र राजनारायण, निवासी आमी सराय सैफ खां, थाना पट्टी, जनपद प्रतापगढ़ के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार आरोपी पेट्रोल पंप मालिकों और अन्य प्रतिष्ठानों की जानकारी जुटाकर उन्हें फोन करता था। इसके बाद सस्ते दाम पर सोलर पैनल लगाने का प्रस्ताव देकर व्हाट्सऐप पर लूमिनस कंपनी के नाम से फर्जी इस्टीमेट भेजता था।

आरोपी कुल लागत की करीब आधी रकम पहले जमा कराने के नाम पर पीड़ितों से अलग-अलग किस्तों में रुपये अपने बताए खातों में मंगवाता था। इसके बाद रकम निकालकर साइबर ठगी को अंजाम देता था। पुलिस के मुताबिक ठगी की रकम आरोपी अपने परिचितों के बैंक खातों में भी मंगवाता था।

पुलिस जांच में आरोपी के खिलाफ विभिन्न जिलों में कुल नौ एफआईआर दर्ज होने की जानकारी सामने आई है। इसके अलावा साइबर क्राइम पोर्टल पर उसके खिलाफ छह से अधिक एनसीआरपी शिकायतें दर्ज हैं। आरोपी के खिलाफ सुल्तानपुर, अंबेडकरनगर, फतेहगढ़, प्रतापगढ़, लखनऊ, गोंडा और महोबा समेत कई जनपदों में मुकदमे दर्ज हैं।

साइबर क्राइम पुलिस ने आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं में कार्रवाई करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस टीम में साइबर क्राइम थाना प्रभारी दिनेश कुमार सिंह, निरीक्षक देवानंद रजक समेत साइबर क्राइम थाना के अधिकारी और कर्मचारी शामिल रहे।

रेलवे स्टेशन जाने वाले मार्ग पर जलभराव, गड्ढों में भरा पानी बढ़ा हादसे का खतरा

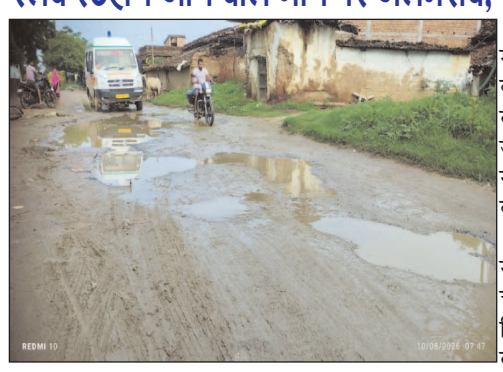

महुली ,सोनभद्र (उत्तरशक्ति)। दुद्धी ब्लॉक के महुली और पोलवा ग्राम पंचायत क्षेत्र में रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाले मार्ग की हालत बारिश के कारण बदहाल हो गई है। भुइया बस्ती के पास सड़क पर जगह-जगह बने गड्ढे में पानी भर जाने से ग्रामीणों और राहगीरों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रामीणों का कहना है कि जलभराव के कारण सड़क पर बने गड्ढे दिखाई नहीं देते। इससे दोपहिया और चारपहिया वाहन चालकों के साथ पैदल राहगीरों के लिए भी दुर्घटना का खतरा बना हुआ है। बारिश के दौरान स्थिति और अधिक खराब हो जाती है। स्थानीय लोगों के मुताबिक यह मार्ग आसपास के गांवों के लोगों के लिए आवागमन का प्रमुख रास्ता है। सड़क की खराब स्थिति के कारण रोजाना लोगों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। ग्रामीणों ने संबंधित विभाग के खिलाफ नाराजगी जताते हुए जल्द सड़क की मरम्मत कराने और जल निकासी की व्यवस्था दुरुस्त कराने की मांग की है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि समय रहते सड़क को ठीक नहीं कराया गया तो किसी दिन बड़ा हादसा हो सकता है। इस दौरान पितरम सिंह, संतोष कुमार, वासुदेव, इस्लामुद्दीन, बघोलन, अंजनी गोस्वामी, भगवान चौरसिया सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद रहे।

बिजली सुधार में भ्रष्टाचार नहीं चलेगा : 550 करोड़ की योजनाओं पर मंत्री की कड़ी निगरानी

वाराणसी। काशी की बिजली व्यवस्था को आधुनिक और भरोसेमंद बनाने के लिए चल रही 550 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं पर अब सरकार ने कड़ी निगरानी का संकेत दे दिया है। प्रदेश के स्टाम्प एवं न्यायालय पंजीयन शुल्क राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रविन्द्र जायसवाल ने बुधवार को स्पष्ट शब्दों में कहा कि विद्युत सुधार कार्यों में किसी भी स्तर पर अनियमितता, लापरवाही या भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप सभी कार्य निर्धारित मानकों और गुणवत्ता के साथ पूरे होने चाहिए। सर्किट हाउस सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक में मंत्री ने बिजली विभाग के अधिकारियों से शहर भर में चल रहे विद्युत सुधार कार्यों की प्रगति का विस्तृत ब्यौरा लिया। बैठक के दौरान एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि कई क्षेत्रीय अभियंता अपने क्षेत्रों में 90 प्रतिशत तक कार्य पूरा होने का दावा कर रहे हैं, जबकि संबंधित पार्षदों ने इन दावों को नकार दिया। इस विरोधाभास पर मंत्री ने कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि कागजों और जमीन की हकीकत में अंतर स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि स्थलीय निरीक्षण में किसी प्रकार की गड़बड़ी मिली तो जिम्मेदार अधिकारी किसी भी कीमत पर नहीं बचेंगे। मंत्री ने प्रबंध निदेशक, पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम को निर्देश दिया कि सभी परियोजनाओं की नियमित भौतिक समीक्षा कराई जाए और गुणवत्ता की स्वतंत्र जांच भी सुनिश्चित की जाए।

बैठक में बताया गया कि 550 करोड़ रुपये की लागत से शहर में व्यापक विद्युत सुधार कार्यक्रम चल रहा है। इसके अंतर्गत पुराने और जर्जर तारों के मकड़जाल को हटाकर नए केबल बिछाए जा रहे हैं, कमजोर पोल बदले जा रहे हैं, पुराने ट्रांसफार्मरों का उच्चीकरण किया जा रहा है तथा आवश्यकता वाले क्षेत्रों में नए ट्रांसफार्मर स्थापित किए जा रहे हैं। इसके अलावा कई विद्युत उपकेंद्रों का आधुनिकीकरण और नए उपकेंद्रों का निर्माण भी प्रस्तावित है। मंत्री ने कहा कि काशी जैसे तीर्थ और पर्यटन नगरी में बिजली व्यवस्था मजबूत होना केवल सुविधा का विषय नहीं बल्कि शहर की प्रतिष्ठा से भी जुड़ा प्रश्न है। लगातार बढ़ती आबादी, पर्यटन गतिविधियों और व्यापारिक विस्तार को देखते हुए मजबूत विद्युत ढांचा समय की आवश्यकता है। रविन्द्र जायसवाल ने विद्युत कार्यों की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए एक नया तंत्र बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्षेत्र में संबंधित विभागीय अभियंता और पार्षद की संयुक्त टीम बनाई जाए, जो चल रहे कार्यों के साथ-साथ अब तक पूरे हुए कार्यों की भी नियमित निगरानी करे। मंत्री ने कहा कि जनप्रतिनिधि सीधे जनता से जुड़े होते हैं, इसलिए उनकी शिकायतों और सुझावों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। यदि किसी क्षेत्र में कार्य अधूरा है, घटिया गुणवत्ता का है या केवल कागजों में दिखाया गया है तो उसकी जवाबदेही तय की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि विभागीय उच्चाधिकारियों को केवल फाइलों पर भरोसा करने के बजाय नियमित स्थलीय निरीक्षण करना चाहिए। बैठक में विद्युत मुद्दों के साथ विकास प्राधिकरण की कार्यशैली भी चर्चा का विषय बनी। मंत्री ने जोनल अधिकारियों और क्षेत्रीय अभियंताओं के व्यवहार पर नाराजगी जताते हुए कहा कि गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों द्वारा अपने मकान की छोटी-मोटी मरम्मत या मामूली निर्माण कार्य कराने पर उन्हें अनावश्यक रूप से परेशान किए जाने की शिकायतें लगातार मिल रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य लोगों को प्रताड़ित करना नहीं बल्कि व्यवस्था बनाए रखना है। छोटे मरम्मत कार्यों को लेकर अनावश्यक नोटिस, दबाव या उत्पीड़न स्वीकार्य नहीं होगा। मंत्री ने उपाध्यक्ष, विकास प्राधिकरण को निर्देश दिया कि ऐसे मामलों की समीक्षा की जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि ईमानदार नागरिकों को बिना वजह परेशान न किया जाए। साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि बड़े और अवैध निर्माणों के विरुद्ध कार्रवाई में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं बरती जानी चाहिए।